श्रद्धाका आलेख—

पू. बापूके निर्वाणके बाद आज दो ही व्यक्ति उनके उत्तराधिकारी हो सकते हैं। राजनीति क्षेत्रमें पू. पंडितजी और आध्यात्मिक क्षेत्रमें पू. विनोबाजी। पू. पंडितजीने बापूसे जो विरासत पाओी है, उससे यहाँ न विरोध है न स्पर्धा। मेरी श्रद्धा है कि पू. विनोबा अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व रखते हुये भी वे बापूके सर्व प्रथम प्रतिनिधि हैं, और अिसीलिये आज हमारी दृष्टि विनोबापर अंकित है। मेरा मानना है कि भारतको ही नहीं; बल्कि समस्त विश्वको विनोबाका मार्ग-दर्शन स्फूर्तिप्रद होगा।

पू. काका साहबका मैं केवल अिसलिये कृतज्ञ नहीं हूँ कि उन्होंने 'विनोबा-दर्शन' की भूमिका लिख दी; बल्कि उनकी उदारताने मुझे अधिक कृतज्ञ अिसलिये बना दिया कि मुझ जैसे मामूली आदमीकी प्रार्थना उन्होंने स्वीकार की। अिस 'विनोबा-दर्शन' में जिन सज्जनोंके लेख संकलित हैं, उन्होंने प्रकाशित करनेकी जो अिजाज़त मुझे दी उसके लिये मैं उनका हृदयसे आभारी हूँ।

शीघ्रताके कारण और कुछ दिक्कतोंके कारण प्रूफमें अशुद्धता रह गई अेतदर्थ पाठकोंका क्षमा प्रार्थी हूँ।

मैं प्रकाशकका आभार माननेमें अिसलिये संकोच कर रहा हूँ कि उनके मेरे सबंध अैसे हैं कि अिसकी आवश्यकता यहाँ कृत्रिमता प्रदर्शित कर देगी।

—जमालुद्दीन तुरक

अपनी बात—

श्री जमालुद्दीन ने मेरे पास अरसे से काम किया है। पाकिस्तानी हवाके बीच भी उसने अपनी कट्टर राष्ट्रीयता पर आँच नहीं आने दी।

विनोबापर उसकी श्रद्धा है। अिस वैज्ञानिक व मत पुरुष पर किसकी श्रद्धा न रहेगी? पर बुद्धिहीन श्रद्धा तो विनोबा को भी ग्राह्य नहीं है।

अपनी श्रद्धा को अिस संग्रह द्वारा जमालुद्दीन ने मूर्तिमंत किया है। उसको जनता-जनार्दन के सामने प्रस्तुत करने में हमें हार्दिक प्रसन्नता है। पू. विनोबा की सेवामें हमारा यह अर्घ्य स्वीकृत हो।

बजाज वाडी, वर्धा ता. ७।१२।४८ —प्रकाशक

आत्म-निष्ठ गणिती

भूमिका लिखने के पहले यह संग्रह पूरा पढना चाहता था लेकिन वैसा नहीं कर सका हूँ। और पढने की ज़रूरत भी क्या है? श्री विनोबा के बारे में औरों ने क्या लिखा है उसे पढ़ कर मुझे थोडे ही अपनी राय बनानी है? श्री विनोबा का और मेरा परिचय सन् १९१० या ११ से शुरू होता है जब वे बडोदा कॉलेज के एक विद्यार्थी थे। सन् १९१७ से हम दोनों सत्याग्रह आश्रम में साथ रहे हैं।

पू. श्री गांधीजी के आश्रम में रहनेवाले आश्रमवासी के नाते हम गुरुभाओी हैं। गुरुभाओी अकसर अेक दूसरे के बारे में प्रशस्ति-पत्र नहीं लिखते हैं। अिसी संकोच के कारण मैंने आजतक अपने साथियों के बारे में कुछ नहीं लिखा है। लेकिन जब अिस संग्रह की भूमिका लिखने के लिये भाओी श्री जमालुद्दीन तुरक ने ...य से कहा तब मुझे अपना संकोच छोडना पडा।

श्री विनोबा के बारे में अितना कहना बस है कि वे आत्मनिष्ठ हैं और गणिती हैं। वे किसी के अनुयायी नहीं हैं, हालां कि भाष्यकार आद्य शंकराचार्य, महाराष्ट्र के आदि संतकवी

ज्ञानेश्वर, और सत्याग्रह के आदि ऋषि महात्मा गांधी तीनों के लिये अुन में असीम आदर और असाधारण भक्ति है ।

श्रीमद्‌भगवद् गीता का अिनका अध्ययन और अनुशीलन असाधारण है । वेद, अुपनिषद, योगसूत्र, बायबल, कुरान आदि धर्मग्रंथों का अिन्होंने जो बडी बारीकी से अध्ययन किया है, वह भी गीता-धर्म को अच्छी तरह से समजने के लिये और अुद्दीपित करने के लिये ही किया है ।

श्री विनोबा गणिती हैं । हिसाब लगाये बिना न कुछ पढते हैं, न कुछ सोचते हैं, न कोअी काम हाथ में लेते हैं । बचपन में जिसने क़िस्म क़िस्म की शरारतें की है अुसे दुनिया की पहेचान हो ही जाती है । कोअी अैसा न समझें की विरक्त और अलिप्त विनोबा दुनिया का व्यवहार नहीं समजते हैं । दुन्यवी लोगों के व्यवहार से अिन्होंने अपना व्यवहार अलग रक्खा है सही, लेकिन नापतोल कभी भी छोडा नहीं है ।

गणिती होने के कारण ही वे अच्छे अध्यापक बने । गणिती होने के कारण ही अिन्होंने खादीशास्त्र को वेग दिया । गणित बुद्धि ने ही अिनसे स्वराज्य-शास्त्र लिखवाया है । गणित बुद्धि का विकास होकर ही अिनमें दार्शनिकता आ गअी है । दुन्यवी व्यवहार के प्रति अिनमें जो अुदासीनता दिखाअी देती है, वह भी गणितबुद्धि में से ही फलित हुअी है ।

धीरज भी अिनमें अिसी गणित-निष्ठा से आ गअी है । 'पकने के पहले बेचना नहीं चाहिये' यह भी अिन का अेक जीवन सूत्र है ।

'आंच लगने से जबतक धुंवा ही धुंवा निकलता है, तबतक दुनिया के सामने मत खडे रहो। आंच बढने पर जब धुवे की ज्वाला बन जायेगी तब दुनिया स्वयं अुसे देख सकेगी।' यह भी विनोबा का अेक जीवनसूत्र है। आज तक अेक कोने में बैठकर अुन्होंने अपनी साधना की। अब वे दुनिया की सेवा करने के लिये तैयार हुअे हैं।

सद्भाग्य से श्री विनोबा को अच्छे अच्छे साथी मिले हैं। भक्त और कदर्दान भी मिले हैं। लोकसंग्रह की शक्ति विनोबा में है अिसीलिये अुनका काम अब ज़ोरों से चलेगा और जड़ पकडेगा।

नापतोल कर खाने-पीने वाले और सोने-अुठनेवाले विनोबा आजकल कुछ बीमार से रहते हैं यह अेक चिंता का विषय है। मेरी प्रार्थना है कि श्री विनोबा स्वयं अपने स्वास्थ के प्रति विशेष ध्यान दें। और अुनसे सेवा लेनेवाली जनता भी अिस बात का हमेशा ख्याल रखें कि सेवकों का स्वास्थ देश की सब से अधिक मूल्य की संपत्ति है।

वर्धा,
ता. १०:१२:१९४८

काका कालेलकर

विनोबा-दर्शन

सूची

विनोबा भावे कौन हैं ?

[ले०— म. गांधी]

श्री विनोबा भावे कौन हैं ? मैने उन्हें ही इस सत्याग्रहके लिए क्यों चुना ? और किसीको क्यों नहीं ? मेरे हिंदुस्तान लौटनेपर सन् १९१६ में उन्होंने कालिज छोडा था। वे संस्कृतके पण्डित हैं। उन्होंने आश्रममें शुरू से ही प्रवेश किया था। आश्रमके सबसे पहले सदस्योंमेंसे वे एक हैं। अपने संस्कृतके अध्ययनको आगे बढानेके लिए वे एक वर्ष की छुट्टी लेकर चले गये। एक वर्षके बाद ठीक उसी घडी, जब कि उन्होंने एक वर्ष पहले आश्रम छोडा था, चुपचाप आश्रममें फिर आ पहुंचे। मैं तो भूल भी गया था कि उन्हें उस दिन आश्रममें वापस पहुंचना था। वे आश्रममें सब प्रकारकी सेवा प्रवृत्तियोंमें—रसोईसे लगाकर पाखाना सफाई तक— हिस्सा ले चुके हैं। उनकी स्मरण-शक्ति आश्चर्य जनक है। वे स्वभावसे ही अध्ययनशील हैं। पर अपने समयका ज्यादा-से-ज्यादा हिस्सा वे कातनेमें ही लगाते हैं, और उसमें ऐसे निष्णात हो गये हैं कि बहुत ही कम लोग उनकी तुलनामें रखे जा सकते हैं। उनका विश्वास है कि व्यापक कताईको सारे कार्यक्रमका केंद्र बनानेसे ही गांवोंकी गरीबी दूर हो सकती है। स्वभा-वसे ही शिक्षक होनेके कारण उन्होंने *श्रीमती आशादेवीको दस्तकारीके द्वारा बुनियादी तालीमकी योजनाका विकास करनेमें बहुत योग दिया है। श्री विनोबाने कताईको बुनियादी दस्तकारी मानकर एक §पुस्तक भी लिखी है। यह बिलकुल मौलिक चीज है। उन्होंने हंसी उडानेवालोंको भी यह सिद्ध करके दिखा दिया है कि कताई एक ऐसी अच्छी दस्तकारी है कि जिसका उपयोग बुनियादी तालीममें बखूबी किया जा सकता है। तकली कातनेमें

तो उन्होंने क्रांति ही ला दी है; और उसके अन्दर छिपी हुई तमाम शक्तियोंको खोज निकाला है। हिंदुस्तानमें हाथकताईमें इतनी संपूर्णता किसीने प्राप्त नहीं की, जितनी कि उन्होंने की है।

उनके हृदयमें छूआछूतकी गंध तक नहीं है। सांप्रदायिक एकतामें उनका उतना ही विश्वास है जितना कि मेरा। इस्लाम धर्मकी खूबियोंको समझनेके लिए उन्होंने एक वर्षतक कुरान शरीफका मूल अरबीमें अध्ययन किया। इसके लिए उन्होंने अरबी भी सीखी। अपने पड़ोसी मुसलमान भाइयोंसे अपना सजीव संपर्क बनाये रखनेके लिए उन्होंने इसे आवश्यक समझा।

उनके पास उनके शिष्यों और कार्यकर्ताओंका एक ऐसा दल है जो उनके इशारेपर हर तरहका बलिदान करनेको तैयार है। एक युवकने अपना जीवन कोढियोंकी सेवामें लगा दिया है। उसे इस कामके लिए तैयार करनेका श्रेय श्री विनोबाको ही है। औषधियोंका कुछ भी ज्ञान न होनेपर भी अपने कार्यमें अटल श्रद्धा होनेके कारण उसने कुष्ठ-रोगकी चिकित्साको पूरी तरह समझ लिया है। उसने उनकी सेवाके लिए कई चिकित्साघर खुलवा दिये है। उनके परिश्रमसे सैकडों कोढ़ी अच्छे हो गये है। हालहीमें उसने कुष्ठ-रोगियोंके इलाजके संबंधमें एक †पुस्तिका मराठीमें लिखी है।

विनोबा कई वर्षोंतक वर्धाके महिला-आश्रमके सञ्चालक भी रहे हैं। दरिद्रनारायणकी सेवाका प्रेम उन्हें वर्धाके पासके एक गांवमें खींच ले गया। अब तो वे वर्धासे पांच मील दूर पौनार नामक गांवमें जा बसे हैं और वहांसे उन्होंने अपने तैयार किये हुए शिष्योंके द्वारा गांववालोंके साथ संपर्क स्थापित कर लिया है। वे मानते हैं कि हिंदुस्तानके लिए "राजनैतिक स्वतंत्रता" आवश्यक है। वे इतिहासके निष्पक्ष विद्वान् हैं। उनका विश्वास है कि गांववालोंको रचनात्मक कार्यक्रमके बगैर सच्ची आजादी नहीं मिल सकती। और रचनात्मक कार्यक्रमका केंद्र है खादी। उनका विश्वास है कि चरखा अहिंसाका बहुतही उपयुक्त बाह्य चिह्न है। उनके जीवनका तो वह एक अंग ही बन गया है। उन्होंने पिछली सत्याग्रही लडाइयोंमें

सक्रिय भाग लिया था। वे राजनीतिके मंचपर कभी लोगोंके सामने आये ही नहीं। कई साथियोंकी तरह उनका यह विश्वास है कि सविनय आज्ञा भंगके अनुसंधानमें शांत रचनात्मक काम कहीं ज्यादा प्रभावकारी होता है, इसकी अपेक्षा कि जहां आगे ही राजनैतिक भाषणोंका अखंड प्रवाह चल रहा है वहां जाकर और भाषण दिये जायें। उनका पूर्ण विश्वास है कि चरखेमें हार्दिक श्रद्धा रखे बिना और रचनात्मक कार्यमें सक्रिय भाग लिये बगैर अहिंसक प्रतिकार संभव नहीं।

श्री विनोबा युद्ध-मात्रके विरोधी हैं। परंतु वे अपनी अंतरात्माकी तरह उन दुसरोंकी अंतरात्माका भी उतना ही आदर करते हैं जो युद्धमात्रके विरोधी तो नहीं हैं, परंतु जिनकी अंतरात्मा इस वर्तमान युद्धमें शरीक होनेकी अनुमति नहीं देती। अगरचे श्री विनोबा दोनों दलोंके प्रतिनिधिके तौरपर हैं, यह हो सकता है कि सिर्फ हालके इस युद्धमें विरोध करनेवाले दलका खास एक और प्रतिनिधि चुननेकी मुझे आवश्यकता लगे।

('हरिजन सेवक' से)

* श्रीमती आशादेवी बुनियादी तालिमी संघकी व्यवस्थापिका हैं। बुनियादी तालिमी संघके मंत्री श्री. अी. डब्ल्यू. आर्यनायकमजीकी धर्मपत्नी हैं। दोनोंने अपना जीवन बुनियादी तालीममें लगा दिया है।

§ अिस पुस्तकका नाम 'मूल उद्योग कातना' है। हिंदी तथा मराठी दोनों भाषाओंमें बुनियादी तालिमी संघ, सेवाग्रामसे प्रकाशित हुअी है।

|| अिस युवकका नाम है मनोहर दिवाण। यह कुष्ठधामके मुख्य प्रबंधक हैं। अिनोंने अपना संपूर्ण जीवन कोढ़ीयोंकी सेवामें लगा दिया है।

‡ अिस पुस्तकका नाम मराठीमें 'महारोग' और हिंदीमें 'कोढ़' है। मराठीमें ग्रामसेवा मंडल, नालवाडी, वर्धासे और हिंदीमें सस्ता साहित्य मंडल, नअी दिल्लीसे प्रकाशित हुअी है

"योग: कर्मसु कौशलम्"

ले० :– स्व. महादेवभाओी देसाओी

प्रसिद्धिकी जिनको कभी परवाह नहीं थी उनको पूज्य गांधीजीके सत्याग्रहने असाधारण प्रसिद्धि दे दी। यह प्रसिद्धि मिल गई तो उससे भी जलकमलवत् निर्लिप्त रहनेकी शक्ति जितनी श्री विनोबाकी है उतनी और किसीकी नहीं है। जिन विशेषताओंके लिए पूज्य गांधीजीने उन्हें प्रथम सत्याग्रहीकी हैसियतसे पसंद किया उन विशेषताओंको सब लोग समझ नहीं सके हैं ऐसी मुझे आशंका है। कई बड़े-बड़े सरकारी अफसरोंने मुझसे कहा कि जवाहरलालजी, भूलाभाई तो बड़े नेता हैं, उनको कड़ी सजा देनी पडती है क्योंकि उनका प्रभाव हजारों लोगोंपर है। विनोबा तो Small fry यानी अल्प जीव—हैं, उनको गांधीजीने बढ़ाया है, उनके असरका सरकारको डर नहीं है। डर हो या न हो मि० एमरीने भी अब श्री विनोबाका नाम अपने निवेदनमें दिया और उनका एक सच्चे दयाधर्मीके नामसे उल्लेख किया है

विनोबाका प्रभाव आज नहीं, वर्षोंके बाद लोग जानेंगे। उनकी थोडी विशेषताओंका निर्देश करना मैं आवश्यक समझता हूं। वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं; शायद वैसे नैष्ठिक ब्रह्मचारी और भी होंगे। वे प्रखर विद्वान् हैं; वैसे प्रखर विद्वान् और भी हैं। उन्होंने सादगीको वरण किया है; उनसे भी अधिक सादगीसे रहनेवाले गांधीजीके अनुयायियोंमें कई हैं। वे रचनात्मक कार्यके महान् पुरस्कर्त्ता और दिन-रात उसीमें लगे रहनेवाले व्यक्ति हैं; ऐसे भी कुछ गान्धी-मार्गानुगामी हैं। उनके जैसी तेजस्वी बुद्धि-शक्तिवाले भी कई हैं। परंतु उनमें कुछ और भी चीजें हैं जो और किसीमें नहीं हैं। एक निश्चय किया, एक तत्त्व ग्रहण किया तो उसका उसी क्षणसे

अमल करना—उनका प्रथम पंक्तिका गुण है। उनका दूसरा गुण निरंतर विकासशीलताका है। शायद ही हममेंसे कोई ऐसा हो जो कह सके कि मैं प्रतिक्षण विकास कर रहा हूँ। बापूको छोडकर यदि और किसीमें यह गुण मैंने देखा है तो विनोबामें। इसलिए *४६ सालकी उम्रमें उन्होंने अरबी जैसी कठिन भाषाका अभ्यास किया, कुरानशरीफका अनुष्ठान किया और उनके हाफीज बन गये हैं। बापूके कई बडे अनुयायी ऐसे हैं जिनका प्रभाव जनतापर बहुत पडता है, पर बापूके शायद ही किसी अनुयायीने सत्य-अहिंसाके पुजारी और कार्य-रत सच्चे सेवक उतने पैदा किये हों जितने कि विनोबाने पैदा किये हैं। "योग कर्मसु कौशलम्" के अर्थमें विनोबा सच्चे योगी हैं। उनके विचार, वाणी और आचारमें जैसा एक राग है वैसा एक राग बहुत कम लोगोंमें होगा, इसलिए उनका जीवन एक मधुर संगीतमय है। "संचार करो सकल कर्मे शान्त तोमार छंद" कविवर टैगोरकी यह प्रार्थना शायद विनोबा पूर्वजन्मसे करके आये हैं। ऐसे अनुयायीसे गांधीजी और उनके सत्याग्रहकी भी शोभा है।

उनके लेख बहुतही उपयोगी हैं। लेखोंसे उनकी मितभाषिता, उनके विचार और वाणीका संयम और उनकी तत्त्वनिष्ठाका पद-पदपर परिचय मिलता रहेगा।

('विनोबाके विचार' से)

श्री विनोबाजीके लेख 'विनोबाके विचार' नामक पुस्तकमें प्रकाशित हुअे हैं। यह पुस्तक दो भागोंमें सस्ता साहित्य मंडल, नअी दिल्लीसे प्रकाशित हुअी हैं।

स्वागतम् ते महाभाग !

लेखक : श्री माखनलाल चतुर्वेदी

जाने कब, किसने जमाने की स्मृति में 'संघे शक्तिः कलौ युगे'—वाली कहावत शामिल कर दी और तबसे आजतक बिना सोचे-समझे लोग इस भ्रांति को दुहराते चले आ रहे हैं। विचार की कसौटी पर चाहे जिस युगको कसिये, व्यक्ति, और केवल एक व्यक्ति, मिलेगा, जिसके महान गुरुत्वाकर्षणके चारों ओर, व्यक्ति-समूह, सौरमण्डलके उपग्रहोंकी भाँति चक्कर काटता हुआ पाया जायगा। वह शक्तिसागर, पूर्व और पश्चिमके मौलिक मतभेदोंकी अनुकूलतासे गान्धी हो, या स्टालिन या ट्रूमैन जैसा कोई और, व्यक्तियोंकी शक्ति-धारा उसमें अपना जीवन विलीन कर देने को विवश है।

अपने जीवनमें समूहकी अपेक्षा गुणको सदा अधिक महत्व देकर महात्मा गान्धीने एकसे अधिक बार उपरोक्त भ्रान्तिपर प्रहार किया है। और अभी उसदिन गान्धी-विचार-रश्मियोंसे आलोकित आचार्य विनोबा जब महात्माजीके अकाल अवसानसे अपरिपूर्ण कार्यकी पूर्तिके उद्देश्यसे दिल्ली पहुँचे तब उनके साथ उनके दो-चार ऐसे साथी थे, जिन्हें याद रखनेमें इतिहास अक्सर भूल कर दिया करता है। अतः आज एक बार फिर यह प्रश्न सामने आया कि समूहकी अपेक्षा व्यक्तिको, युग पुरुषको, क्यों न शक्ति एवं सामर्थ्यका स्रोत माना जाय ?

हाँ, वह शक्ति-स्रोत, निर्मित जमाने का बागी होता है। वह अपना जमाना स्वयं निर्माण करता है। उसके आ ेह-बिन्दुओंको छू सकने में सर्वथा असमर्थ, लीक-लीक चलने वाले लघु-तंतुओंको रीझ और खीझ. उसे

अपने अभिमतसे विमुख नहीं कर पातीं । जमाना लाचार होकर उसके पीछे चलने को बाध्य होता है ।

विश्व को एक प्रवाह कहा है । प्रवाह तो निम्नगामी ठहरा । युग-पुरुष इस चिरन्तन-प्रवाह को जडत्व के पतन-पथ से खींचकर चिन्मय केन्द्रकी ओर मोड़ देता है । राष्ट्रोंके जीवन में ऐसे ही मोड उज्वलतम अध्यायोंका सृजन करते हैं ।

बेचारा इतिहास ! विनोबाने, अभी उसे अवसर ही कहाँ दिया कि वह इनका परिचय लिखे । प्राचीन ऋषियोंके अनुगामी इस साधकने अपनी साधनाके परिणामोंको नीरस और उपेक्षित रचनात्मक कार्योंके दुर्गमें सूम के सोनेकी भाँति इस सावधानीसे बन्द रखा कि इतिहासके गुप्तचर उसपर डाका नहीं डाल सके । महात्माजीसे मिलनके वर्ष १९१६ से लगाकर उनके निर्वाण—सन् १९४८—तक बत्तीस वर्षोंकी लम्बी अवधिमें विनोबाजीने अपने नामको प्रसिद्धि सहित छापनेके लिये समाचारपत्रोंको केवल तीन मौके दिये और वे तीनोंके तीनों क्षणजीवी । असहयोग-आन्दोलनकी प्रखरताके बीचोबीच, सन् १९२३ में, मध्यप्रान्तीय सरकारकी निरंकुशता मध्यप्रान्तकी तरुणाईको राष्ट्रीय झण्डेके सम्मानकी रक्षाके लिए बलि-पथ पर चुनौती दे बैठी । नागपुरमें झण्डा सत्याग्रह छिड गया । तब एक दिन, जब तत्कालीन सरकारी अधिकारियोंने, सत्याग्रहका संचालन करने वाली समितिको सहसा गिरफ्तार कर लिया, साधनानिरत विनोबाका आसन, झण्डेकी मान-रक्षाके लिये डोल उठा और सत्याग्रह—संचालनका भार संभालनके लिए वे बाहर आये । किंतु दूसरे दिन सत्याग्रह प्रारंभ करनेके पहले ही, विनोबा पहुँचा दिये गये । श्री विनोबाके समाचारपत्रोंके शीर्ष-स्थानमें आनेका यह प्रथम अवसर था और उसका शुभ प्रारंभ मध्यप्रांतमें, उनके बलिपथ पर आरूढ़ होनेसे, हुआ ।

दूसरी बार सुदूर दक्षिण केरलसे, आयी हुई एक दर्दीली पुकारसे गांधीजी बेचैन हो उठे । प्रभुके दर्शनोंसे वाचित हरिजनोंने मंदिर प्रवेशके

लिए वहां सत्याग्रह छेड़ रखा था। श्री विनोबा उसके संचालनके लिए गुरुवयूर भेजे गये। यह सन् १९२४ की बात है।

प्रसिद्धि का तीसरी अवसर जरा देर से पहुंचा— सन् १९४० में। किन्तु गौरव और महत्वमें यह सबसे आगे रहा और इसका यश भी इस प्रांतको ही मिला। सत्याग्रहके कठोरतर अनुशासनों को पार करनेमें भारतीय जनता सामूहिक रूप से गांधीजीकी नजरोंमें असमर्थ ठहरी। अतः भारत सरकारकी युद्ध-नीतिका विरोध करनेके लिए उन्होंने व्यक्ति-गत सत्याग्रहका विकल्प निश्चित किया। आचार्य विनोबा इस यज्ञके प्रथम होताके गौरवसे अभिषिक्त हुए।

राजनैतिक प्रसिद्धिके क्षेत्रमें मची हुई प्रथम आनेकी उस स्पर्धा को देखिये, जिसमें त्याग और कुरबानियोंका ढिंढोरा पीटते हुए, उसी पूजा-वेदी पर पाँव रख कर अपने साथियोंमें श्रेष्ठ दीखनेकी कोशिशोंका ताँता बँधा हुआ है, जिससे प्रेरणा और क्रिया-शक्ति प्राप्त होती रही है; फिर इस व्यक्ति विशेषकी समर्पण भावनाको देखिये जो साधक जीवनके जाने किस आकर्षणसे अभिभूत, प्रसिद्धि और लोक प्रतिष्ठाको आवर्जन की तरह बार बार ठुकराता आ रहा है!

बम्बई प्रान्तके कुलाबा जिलेके गागोडा गांवकी भूमि गरबीली है श्री विनोबाजीका बचपन उसकी गोदमें खेला। तब श्री विनोबाका पूरा नाम था श्री विनायक नरहरि भावे। विद्याभ्यासकी लोक-परम्परा के अनुसार सन् १९०७ में बड़ौदा के हाईस्कूलमें आपका नाम लिखा गया; किन्तु विद्रोही जीवनका कँटीला मुकुट पहनानेके लिये राष्ट्रका भविष्य जिन विभूतियोंको वरण करता है, उन्हें शासनकी दीवारोंसे बँधी निर्जीव पाठशालाएँ पचा नहीं सकतीं। श्री विनायकने बिना कोई डिग्री लिये सन् १९१६ में गुलाम शिक्षा प्रणालीको छोड़ दिया। घर और परिवारिक जीवन की सीमाएं, पश्चिमके आदर्शोंपर ढले भौतिक उद्योगों के देशको समृद्ध बनानेके पक्षपाती पिताका स्नेह, दिलासोंसे रपटीले पथके सुखमय आक-

र्पण, साधारण मानवको ललचानेवाली महत्वाकांक्षाएं इन सब जंजीरोंको तोड़ते जानेमें ही श्री विनोबा सुख अनुभव करते रहे। उन्हें उस शिक्षाकी तालाश थी, जिसके लिये कहा गया है— 'सा विद्या या विमुक्तये।'

सबसे पहले विनोबा फिर उनके शेष दोनों भाई भी, लोक-साधनाके महत्तर आदर्शोंकी प्राप्तिके लिए घर छोड़ कर चल दिये।

योग्य मार्ग-दर्शककी खोज में, दीर्घ और तीखे मानसिक संघर्षोंके बाद विनोबाजी सन १९१६ में घर छोड़ कर काशी पहुंचे। महात्मा गांधी साबरमती आश्रम स्थापित कर चुके थे। पत्र लिख कर आपने महात्माजीसे आश्रममें आनेकी अनुमति चाही। किन्तु प्रतीक्षा सहन नहीं हुई। बिना अनुमति प्राप्ती किये, मेहमान नहीं अतिथिके रूपमें, श्री. विनायक साबरमती पहुंचे। महात्माजीने अपने आश्रमके प्रारम्भमें ही मानो इस छोटे-से सिद्ध विनायकका स्वागत किया। अपराजिता आर्य परम्परा अपना नन्हासा रूप धर कर मानों सिद्धियोंका भण्डार महात्माजीकी साधनाकी गोदमें सौंपने आयी।

आश्रमवासी विनायकने आश्रमके कर्मठ और कठोर अनुशासनोंकी तपनसे गुजरनेके लिए अपने मन और शरीरको उसी तरह फेंक दिया जिस तरह प्राचीन ऋषि-पुत्रोंके, परिचर्या-व्यस्त, साधना-मय जीवनकी कहानी हम उपनिषदोंमें पढ़ा करते हैं। आज भी विनोबा शरीर-श्रमको बहुत महत्व देते हैं। उस दिन दिल्लीके राजघाट पर प्रार्थना-सभामें उन्होंने कहा, शरीर-श्रम छोड़नेसे ही दुनियामें साम्राज्यशाही और अन्य शाहियां पैदा हुई हैं। श्रीविनायकका यह आश्रमवास कितना श्रद्धामय, तपोनिष्ठ एवं अध्ययनशील रहा—वह इस घटनासे व्यक्त होता है—

दुर्बल, अस्वस्थ शरीर विनायकके कठोर श्रमशील किन्तु शिकायत-रहित चर्या और परिचर्यासे प्राभावित महात्माजीने एक दिन पूछा— "इतने दुबले हो रहे हो, फिर भी इतना सारा काम कैसे कर लेते हो!"

गिने-चुने शब्दोंमें अथाह गहराई लिये हुए उत्तर था—"काम करनेकी इच्छा शक्तिसे।"

कैसे कहें कि इस शिष्यको अपने समस्त ज्ञानालोकसे उद्भासित कर-देनेके सात्विक उछाहसे गांधीजीका हृदय भर नहीं आया होगा !

इस तरह ज्योतिसे ज्वाला प्रज्वलित हुई और चिनगारीसे दीपदानकी परम्परा जाग्रत की गई।

मध्यप्रांतमें गांधीजीके मत, पथ और व्रतके एकनिष्ठ प्रचारमें अपना जीवन खपा देने वाले स्वर्गीय देशभक्त जमनालालजी बजाजकी अनन्य सेवा-भावनासे सन् १९२१ में महात्माजी द्वारा 'वर्धा आश्रमकी स्थापना की गई। विनोबाजी इसके प्रधान आचार्य होकर साबरमतीसे वर्धा आश्रम लाये गये।

महात्माजीके निवाससे गौरवान्वित सेगांव (वर्धा) जिस तरह सेवाग्राम बन गया, उसी तरह वर्धासे ५ मील दूरीपर अस्वस्थित पौनार ग्राम, जिसे हरिजन सेवाकी सुविधाके लिये विनोबाजीने चुन लिया, विनोबाके चरण पड़तेही परमधाम बन गया। मानों, अपनेको जीतेजी गाड़ देनेवाले आचार्य विनोबाने सन्त तुकारामकी वाणीको दुहराकर कहा—

"आपुले मरण
पाहिले मी डोळा"

अर्थात—अपनी मौत मैंने अपनी आंखों देखी है।

राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी द्वारा प्रज्वलित अभिनव ज्योति अपने अंतःकरणमें आलोकित किये आचार्य विनोबा महात्माजीके महाप्रस्थानके अनन्तर स्वतन्त्र भारतके हृदय-प्रदेशको द्वेष और कलुषसे निर्मल बनानेका प्रयत्न कर रहे हैं। महात्मा गांधीके अन्यतम साथी स्वर्गीय महादेव देसाईके शब्दोंमें, विनोबा ऐसे व्यक्ति हैं, जिनकी मेधा प्रतिक्षण विकसित होती रहती है। प्राचीन ऋषिकी वाणी दुहरायी जाय तो विनोबाका जीवन उस मंत्रको जीवन प्रदान कर रहा है, जिसमें कहा गया है—

चरन्वै मधु विंदंती चरन्सदु सुदम्बरम्
..............चरवैति, चरैवेति ॥

संत तुलसीदासने भगवान रामके मुंहसे अनन्य भक्तकी परिभाषा यों कहलायी है—

सो अनन्य जाके असि मति न टरै हनुमन्त।
मैं सेवक, सचराचर रूप स्वामी भगवन्त।

और उस दिन, कुरूक्षेत्र छावनीमें विनोबाने शरणार्थियोंके बीच अपने आगमनका उद्देश्य इस प्रकार समझाया—

"आप लोगोंको मैं ऐसे देखता हूँ, जैसे भक्त भगवान्को देखता है।"

विनोबाके शब्द-कोषमें कमजोरी या लाचारीका बोध करनेवाला कोई शब्द आपको नहीं मिलेगा। इस विषयमें उनके विचारोंका ओज इन पंक्तियोंमें अनुभव कीजिये—

"चन्द्रके साथ चन्द्रका वातावरण रहता है। मंगलके साथ मंगलका। वैसेही मेरे साथ मेरा वातावरण रहना चाहिये। लोग कहते हैं,— यह तो कलियुग आया है। किंतु कलियुगमें रहना है या सतयुगमें, यह तो तू अपना चुन ले। तेरा युग तेरे पास है। इसलिए हम ऐसा न मानें कि दुनियाकी हवाके सामने हम लाचार हैं। लाचार तो जड़ होता है। हम लोग चेतन हैं, आत्मस्वरूप हैं। हमारा वातावरण हम बनायंगे।"

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीके इस सुयोग्य प्रकाश-वाहक और उत्तराधिकारी, संत एवं लोकनेताका इन पंक्तियोंके साथ; सेवा व्यापक क्षेत्रमें हम स्वागत एवं अभिनंदन करते हैं—

नमो परम ऋषिभ्यो, नमः परम ऋषिभ्यः।

शान्तिदूत आचार्य विनोबा भावे

गांधीवादके प्रकांड विद्वान्, साधु तथा तपस्वी

[लेखकः– आचार्य नित्यानन्द सारस्वत]

महापुरुषोंके सिद्धान्त शाश्वत होते हैं। उनसे समस्त भूमण्डल प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे सदाही प्रभावित हुआ है। उनके बड़े बड़े अनुयायी भी होते हैं, जिनका जनतापर यथेष्ट प्रभाव पडता है। बापूका यह वैशिष्ट्य आश्चर्यकी बात नहीं। वे हमें और कुछ भी दे गए हैं, जिनमें बापूके पट्ट शिष्य उल्लेखनीय हैं। जो सत्य और अहिंसाके परम उपासक एवं प्रतिक्षण कार्य निरत जनताके सच्चे सेवक हैं। इनकी तुलना भारतके आर्षकालीनसन्त महर्षियोंसे ही की जा सकती है। इनको अपनी प्रसिद्धिका जरा भी खयाल नहीं, बल्की वे लोग-ख्यातिसे घबराते हैं। किन्तु अब ज्योतिर्मय बापूके अस्त हो जानेसे वे अपनी उज्वलता छिपा सकेंगे। वैसे भी उनके आदर्श-जीवनकी महक चारों ओर फैलती जा रही है। उन महर्षिकल्पसन्तोंमेंसे एक श्री 'विनोबा' है।

आप बड़ेही अध्ययनशील और गान्धी-वादके पूर्ण मर्मज्ञ हैं। आपका धार्मिक अध्ययन बड़ा गहरा है। आदर्श बहुत ऊँचे हैं और आचरणभी उनसे कम नहीं। इनके आहार-विहार, आचार और विचारमें एकसूत्रता हैं, इसलिए उनका जीवन मधुरतम हो गया है। कविकी वाणीमें वह ' सत्यं शिवं सुन्दरम्' है।

धर्मपरायण परिवार

विनोबाजीकी मा धर्ममें बडी श्रद्धालु थीं। भोजन बनानेसे पहले कडीसे कडी बीमारीसे उठनेके बाद भी चाहे ठण्डेसे ठण्डा मौसम क्यों न

हों, वे स्नान अवश्य कर लेतीं। कितनेही मराठी सन्तोंके भजन उन्हें याद थे। उनमेंसे कुछ तो मानो उनकी आत्मासे निकला करते थे। वे भोजन बनाते समय भी इनको गुनगुनाती रहतीं। कभी कभी तो दालमें नमकभी दुबारा पड जाता और कभी बिलकुल ही भूल जातीं। विनोबाजी तो उस समयभी सात्विक-चिन्तनमें मस्त रहा करते, उन्हें पता तभी चलता, जब छोटे भाई बालकोबाजी इसकी शिकायत करते।

इनकी धर्मप्राणा मा धर्मके वास्तविक तथ्यभी इन्हें बतलाया करती थीं। वह प्राचीनताकी उपासिका होनेपर भी निरर्थक रीति-रिवाजों को तोड़नेके भाव, इनमें भरा करतीं। एक बार गुप्तदानके बारेमें बतलाया कि "हम पण्डितजीको निमन्त्रण देते हैं। उस समय गुप्तदानके लिए लड्डूमें चवन्नी रख दी जाती है। पंडितजीके दांत टूटने और निगलनेसे बचानेके लिए कानमें कह देते हैं कि 'जरा धीरे चबावें, अन्दर चवन्नी है।' ऐसी हालत में वह गुप्तदान कहां रहता है? जब हममें ठकुरसोहातीका लोभ-संवरण करनेकी शक्ति ही नहीं, तो मिथ्या रूढ़ि-वादको क्यों निभावें?"

नेकीकर और नदीमें डाल

बचपनकी ऐसी सूक्तियोंको विनोबाजीने यादही नहीं रखा, अपितु उनका स्वरूप और भी निखराडाला। कुछ वर्षों पहले एक दानवीर इनके पास आए। उन्होंने सात्विक दानकी अभिलाषा प्रकट की। विनोबाजीने एक सार्वजनिक इमारतमें यह रुपया लगानेका सुझाव दिया। किन्तु जब उनको पता लगा कि वे दानवीर (?) इमारतके उस हिस्से पर अपना नाम लिखे जानेकी भी इच्छा रखते हैं, तो विनोबाजीने बातचीतका सिलसिला वहीं बन्द कर दिया। 'नेकी कर और नदीमें डाल' वाली सलाह और ऐसे सात्विक दान (?) को ग्रहण न कर सकनेकी असामर्थ्यता प्रकट की।

नमोह न संशय

जब विनोबाजी कालेजके द्वितीय वर्ष में थे, तभी आपने घर छोड़ दिया उस समय भी आप दृढ़निश्चयी थे। जैसे हम रेल पर सवार होनेसे

पहले अपने गन्तव्य स्थानका निर्णय कर लेते हैं, वैसेही आपने भी अपनी जीवनयात्रा की सांगोपांग रूपरेखा तभी बना ली थी। घर छोड़नेसे पहले आपने अनक विषयोंमें दक्षताके प्रमाणपत्र अग्निमें स्वाहा कर दिए। एक भी सर्टिफिकेट न बचा। मा की ममताने तो जलानेके लिए रोका भी, किन्तु आप गम्भीर स्वरमें बोले—'जब मुझे इस जीवनमें इनसे कोई काम लेना ही नहीं है, तब घरमें रखकर कूड़ा-करकट बढ़ानेसे फायदा ही क्या?' अपने आप पर इनको तब भी पूरा भरोसा था। ये आज तक न कभी 'संशयात्मा' बने, और न कभी 'विनश्यति' का मौका आया।

स्वावलंबन

खादीके आप अनन्य भक्त हैं। वे दूसरोंको 'हाथका कता और हाथका बुना' ही किन्तु 'पूरी मजदूरी देकर बनाया हुआ' कपड़ा ही पहननेका परामर्श देते हैं। आप तो अपनेहाथका पहनते ही हैं। कताईमें आपको अहिंसाकी प्रतीमूर्ति दीखनेके साथ ही आनन्द भी आता है। लगातार आठ घण्टे कातना तो इनके बांयें हाथका काम है। बैठे बैठे रीढ़की हड्डी भले ही दर्द करती रहे, किन्तु आपने जहां कातना शुरू किया, पालथी लगाई कि चार घण्टे बाद ही उठेंगे। आसन-मुद्रा बदलने तक का काम नहीं। मौन-साधना भी साथ साथ चलती रहती है। कातते समय इनका सूत कभी टूटता नहीं। एकरस तार चलता रहता है। आप जहां जाते हैं सूत्रयज्ञ के उपादान साथ रखते हैं। आपको ऐसा मेहमान अच्छा नहीं लगता, जो अपना चरखा या तकली घर भूल आया हो।

आपकी वेश-भूषा बिलकुल साधारण है। जगद्गुरू शंकराचार्यकी "कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः" वाली विचारशैली पर निर्भर है। एक भाई-ने तो विनोद में यहां तक कहाथा कि 'बिनोबाजी गरीबसे गरीब किसानके प्रतीक हैं, लेकिन जब तक उनकी धोती सफेद है, वे पूरे किसान नहीं माने जा सकते। 'गिबन' ने ठीक ही कहा है 'रोम गिरा कैसे?' भोग-विलास-से। 'रोम चढ़ा कैसे? सादगीसे।'

संयम-नियम

अपरिग्रही विनोबाजी छोटेसे छोटे ग्रामउद्योगको प्रोत्साहन देते हैं। अपनी कुशाग्रबुद्धिसे दूसरोंको जो प्रेरणा देते हैं, उसको पहले स्वयं उपयोगिताकी कसौटी पर कसते हैं। अपने आश्रमकी झाड़ू तक आप स्वयं अपने हाथसे बनाते हैं। उसी झाड़ूसे सारा 'परंधाम' स्वच्छ होता है। अपने विद्यार्थियोंको जहां वे अध्यात्मवादके गूढ़ तत्त्व समझाया करते हैं, वहां झाड़ू निकालनेके सक्रिय सूत्र भी। आपका विश्वास है कि बापूका महात्मापन उनकी अध्यात्मप्रवणता और राजनीति कुशलतासे नहीं किन्तु गांधीजीके कातने, पीसने, जूता गांठने और पाखाना साफ करनेसे कायम हुआ है।

कर्मवीर विनोबाजी अपने हाथसे ही पीसते है। आप प्रो० भनसालीकी तरह रातके ११ बजेसे सबेरेके ४ बजे तक तो नहीं पीस सकते, किन्तु 'साबरमती आश्रम' वाली डेढ़ घंटा नियमसे पीसनेकी आदत आज भी रूढ़मूल है। पीसना व्यायामके रूपमें भी जीवनका एक आवश्यक अंग है। व्यायामके मामलेमें 'चट रोटी पट दाल' आपको पसन्द नहीं। शनैः शनैः किया हुआ व्यायाम ही नस और पञ्चेन्द्रियको जीवनशक्ति देता है। चटपटी कसरतसे 'मसल्स' तो भले ही बन जायें; पर उन सुदृढ पोशियोंकी उपमा हरी-भरी अमरबेलसे ही दी जा सकती है, जो कि वृक्षका नाश कर देती है। 'फिफ्टीन मिनिट्स् एक्सरसाइज्' जैसे व्यायामोंसे आपको गहरी चिढ़ है। आपका खयाल है कि थोड़ी देरके व्यायामोंसे शारीरिक अस्वस्थता होनेपर मानसकी विचारधारा भी प्रभावित होती है। आचार्य विनोबाने बतलाया था कि कार्लाइल जैसे महान् तत्वान्वेषिके ग्रंथोंमें विचार-वैषम्यका मूल कारण शरीर-विकृति ही थी। उनके सिरदर्दके कारण ही यह अनिवार्य लेखनदोष आ गया था।

सजीव कला के उपासक

संयमी विनोबाजी 'साहित्य संगीत कला विहीनः' के कायल तो हैं, किन्तु आज की परिस्थिति उन्हें दरिद्रनारायणकी सेवामें ही कलाकी झांकी

देखनेको बाध्य करती है। एक बार रसिक मित्रसे मिलने चले आए। मित्र महोदय साधनसम्पन्न ही नहीं, किन्तु रईस भी हैं। सुरुचिपूर्ण कलाको प्रोत्साहन देनेकी उनकी पुरानी आदत है। उनके साथ एक कीमती चित्र था। जिसमें प्राकृतिक सौन्दर्यका अनूठा चित्रण हुआ था। उसे देखकर आप अन्यमनस्क ही नहीं चिन्तित भी हो गए। सन् १९४० में बापूके द्वारा सर्वप्रथम सत्याग्रही चुने जानेसे होनेवाली असाधारण ख्यातिसे भी जल-कमलपत्रवत् निर्लिप्त रहनेवाले सन्तके दिव्य ललाट पर विषादकी गहरी रेखा उभर आई। लालाजीने समझा चित्र-कलामें अभिरुचि नहीं है। विनोबाजी-ने स्पष्टीकरण किया कि मैं चित्रकलाका परम उपासक हूँ। इस निर्जीव चित्रके रुपए हमें सजीव चित्रोंको समुन्नत बनानेमें लगाने थे। इस चित्रके गुलाबी रंगको मनोहर आभा देनेसे पहले जरूरी है कि हरिजन बालकोंके गालों की सुर्खी नयनाभिराम हो।

समयकी पाबंदी

समयके आप बड़े पाबंद हैं। इस विषयमें खुद बापूने इनकी भूरि भूरि प्रशंसा की है। एक बार आप संस्कृत पढ़ने की आकांक्षासे एक वर्षका अवकाश लेकर आश्रमसे बाहर चले गए। वर्षकी समाप्ति पर ठीक उसी तिथीको उसी समय आप आश्रममें घुसे जिस टाइम पर उसे छोड़ा था। महान् बापू भी समयकी इस पाबन्दीसे आश्चर्य चकित हो गए।

बापूका 'काल करे सो आज कर' वाला भजन उन्हें क्रियात्मक रूपसे भी बहुत पसंद है। जब आप 'पौनार' में गए ही थे, तब की बात है। एक बार आपको अपने उसी ग्रामके हरिजन विद्यार्थीको खाना पकाना न आने-का पता लगा। उसी दिनसे इस कमीकी पूर्तिके लिए आप उसे पाकशास्त्र सिखलाने लगे। (उन दिनों 'पौनार' के धर्माभिमानियों (!) ने विनोबा-जीका मुफ्तका मट्ठा तक छोड़ दिया था।)

पढ़नेमें संयमी

आचार्य विनोबाजीकी प्रकाण्ड पाण्डित्यपूर्ण विचार-धारासे आपका

पुस्तक-पाठ जोरोंसे चलनेका लोगोंका खयाल है, किन्तु आप पढ़नेमें भी संयमी हैं। ऐरी गैरी किताबोंके फेरमें न पडकर चन्द चुनी पुस्तकें पढ़ते हैं। जो पढ़ते हैं, उस पर पूरा मनन करते हैं। उसे अपनी सर्वतन्त्र स्वतन्त्र विचार-पद्धतिसे मिलान करते हैं। उत्कृष्ट प्रमाणित होने पर अपने विचार-कोषमें सम्मिलित कर लेते हैं। किसी भी 'वाद' की पोथी पढ़कर सहसा प्रभावित हो जाना, आपकी जन्म-कुण्डलीमें नहीं लिखा है। गंगाजी नहा-कर गंगादास और जमुनाजीके दर्शनकर जमुनादास हो जाना सभीके लिए निकृष्ट है।

स्थित प्रज्ञ

'दुःखेष्वनुद्विग्नमना सुखेषु विगत-स्पृहः' होकर आप स्थितप्रज्ञोंकी श्रेणीमें बहुत पहले पहुँच चुके हैं। सन् १९४२में बापूने 'भारत छोडो' का नारा लगानेसे पहले अवश्यम्भावी गिरफ्तारी पर अनशन द्वारा आत्म-बलिदान करनेका इरादा जाहीर किया था। उनका विश्वास था कि प्रबल हिंसाके प्रतिरोधमें परम अहिंसकका पावन रक्त निःशेष हुए बिना अहिंसा कायरताकी मौत मर जाएगी। ज्यों ही आश्रममें इस विचारका पता लगा, त्यों ही वहां श्मशानका सा सन्नाटा छा गया। ऐसा प्रतिरोध देखा तो क्या सुना भी न था। भाई महादेव देसाई तो थर्राने लगे, आंखोंकी पुतलियां ऊपर चढ़ गई। मशरूवालाजीने धीरज धरकर तर्क चालू किया। सबको अन्तिम भरोसा विनोबाजी पर था।

वे आए। बापूने अपने मन्तव्यको बतलाया। बापूके अनन्यभक्त विनोबाजीने सारी बातें सुनीं। फिर अपने सुलझे शब्दोंमें कहा, 'आपका विचार ठीक है। ऐसी स्थितिमें अहिंसकका आत्म-बलिदान उसके कर्तव्यकी परिधिमें है। पर, अन्तिम निर्णय व्यक्ति स्वयं ही कर सकता है।' बापू इस पर दो चार दिन और मनन करनेकी अवधि भी देने लगे। विनोबाजीने बिना किसी हिचकिचाहटके इतना ही कहा :— 'मेरे लिए इसमें और सोचनेको क्या है?' जैसे पौनारसे शान्त आकृतिमें आए थे, वैसी ही सौम्य

मुद्रामें उसी समय चल पडे। जिस बातसे दूसरे मनस्वी पुरुषोंके हृद्गतिरोध-की आशंका हो गई थी, वह भी विनोबाजीके लिए मानो कोई आनन्दकी बात थी। सच तो यह है कि 'या निशा सर्वभूतानां तस्याञ्जागर्ति संयमी।'

मा-बापके शादी करनेके अनेको प्रयत्न करने पर भी आप पूर्ण नैष्ठिक ब्रम्हचारी हैं। स्वर्गीय महादेव भाईके शब्दोंमें 'बापूके बाद आप ही ऐसे व्यक्ति हैं; जिनकी मेधा निरन्तर विकसित होती रहती हैं।' बापूके यम नियमोंकी इनमें साकार प्राण-प्रतिष्ठा है। आज सारे राष्ट्रकी निगाहें इस शान्तिदूतकी ओर हैं। देखें, हिन्दुस्तानके निवासी ऐसे सन्त शिरोमणिके प्रयत्नसे अपने नैतिक धरातलको कितना ऊँचा उठाते हैं?

सन्त विनोबा

[लेखक :– रामनारायण उपाध्याय]

यदि आप बीसवीं शताब्दीमें अरण्य-कालीन महर्षिके दर्शन करना चाहते हों, पौराणिक प्रवचनोंके रूपमें आधुनिक युगकी सर्वश्रेष्ठ विचारधारासे परिचित होना चाहते हों, मूक जनताकी वाणीको युग-धर्मके रूपमें सुनना चाहते हों और सर्वोदयकी कामनाके साथ ज्ञानर्षि कर्मयोगीको जनता-जनार्दनकी सेवा-उपासनामें प्रत्यक्ष तल्लीन देखना चाहते हों तो एक बार सन्त विनोबासे अवश्य मिलिये।

गीताके कर्मयोगसे वे कुछ इतने तदाकार हो चुके हैं कि सर्वोदयके विधायक कार्यक्रमके किसी भी अंगसे उन्हें अलग नहीं कहा जा सकता। उनके जीवनमें ज्ञान और कर्मका अद्भुत समन्वय है। वेद और उपनिषद्-कालीन प्राचीन दर्शनका अध्ययन कर उसे आजकी विचारधारामें रखने और उससे आजकी परिस्थितिमें आजके मानवकी समस्याओंका हल करानेका प्रमुख श्रेय उन्हींको है। वे मौलिक विचारक ही नहीं, वरन् अपने प्रत्येक विचारको जीवनमें उतारने वाले आचार्य भी हैं। आज भी उनमें विविध भाषाएं पढ़ने और सीखनेकी अद्भुत लगन और जिज्ञासा है। अभीतक वे संस्कृत, फारसी, उर्दू, हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगला, अंगरेजी, तेलगू, कन्नड और मलयालम्‌का अध्ययन कर चुके हैं, साथही बाइबिल, कुरान, वेद, उपनिषद् और गीताके तो वे विशेषज्ञ ही माने जाते हैं। भाषाओंकी तरह ही विविध धर्मोंके ग्रन्थ और दर्शन पढ़नेकी और आज भी उनमें विद्यार्थियोंकी सी उत्सुकता और दिलचस्पी है। एक शब्दमें यदि उन्हें 'स्थितिप्रज्ञ' कहें तो अत्युक्ति न होगी। स्वभावसे वे

एकांत-प्रिय और बच्चों जैसे सरल और विनम्र हैं। जीवनमें वे समाजवाद और गांधीवादको जोडनेवाली वह कडी हैं, जिसके आधार पर भारतमें सही सही ढंगसे 'गांधीवाद और समाजवाद' का समन्वय साधा जा सकता है

आचार्य विनोबाजीसे बढ़कर अनवरत कर्मण्य और प्रसिद्धिसे भागनेवाले मौन साधक बिरले ही मिलेंगे।

सबसे पहले वे जनताके परिचयमें तब आये जब स्वयं गांधीजीने प्रथम सत्याग्रहीके रूपमें उन्हे जनताके समक्ष रख दिया। महादेव भाईके शब्दोंमें कहें तो "प्रसिद्धिकी जिनको कभी परवाह नहीं थी, उनको पूज्य गांधीजीके सत्याग्रहने असाधारण प्रसिद्धि दे दी।" प्रसिद्धि मिल गई तो उससे भी वे जलमें कमलवत् निर्लिप्त रहे।

गांधीजीने विनोबाजीका परिचय कराते हुए लिखा था— "वे संस्कृतके पंडित हैं। उनकी स्मरण-शक्ति आश्चर्यजनक है। वे स्वभावसे ही अध्ययनशील हैं। तकली कातनेमें तो उन्होंने क्रान्ति ही कर दी है और उसके अन्दर छिपी हुई तमाम शक्तियोंको खोज़ निकाला है। उनके हृदयमें छुआछूतकी गन्ध तक नहीं है। साम्प्रदायिक एकतामें उनका उतनाही विश्वास है, जितना मेरा।"

श्री बिनोबाजी दृढ़-निश्चयी हैं। किसी भी कामको धीरे-धीरे करने या दो बार करनेमें उनका विश्वास नहीं है। जिस रास्ते हमें नहीं जाना है, उसका हमें 'रस्सा ही काट देना' चाहिये। यही उनका जीवन-सूत्र है। पहले-पहल जब उन्होंने घर छोडा तो इसी नियमके अनुसार। इस सम्बन्धमें वे लिखते हैं कि एक दिन मुझे लगा कि मैं अब इस घरमें नहीं समा सकता। जब घर छोडा उस वक्त 'इन्टरमीजिएट' में था। कितने ही मित्रोंने कहा कि अब दो-तीन साल और लगेंगे। बी० ए० पास होकर उपाधि लेकर जाओ। उन्होंने सबको एकही जबाब दिया कि "विचार करनेका यह ढंग मेरा नहीं है।" आगे वह लिखते हैं—घर छोडनेके पहले भिन्न-भिन्न विषयोंके सर्टिफिकेट लेकर चूल्हेके पास बैठ गया और तापते-तापते उन्हें जलाने लगा। माँने पूछा,

"क्या कर रहा है ?" मैंने कहा, "सर्टीफिकेट जला रहा हूँ।" उसने पूछा, "क्यों ?" मैंने कहा, "उनकी मुझे क्या ज़रूरत ?" मांने कहा, "अरे, ज़रूरत न हो तो भी पडे रहें तो क्या हर्ज है ? 'जलाता क्यो है ?' 'पडे रहें तो क्या हर्ज है ?' इन शब्दोंकी तहमें ऐसी वृत्ति छिपी हुई है कि आगे कभी उनका उपयोग करनेकी ज़रूरत पड़े तो ? लेकिन आखिर जरूरत पड़े तो पड़े ही क्यों ? जिस मार्ग हमें नहीं जाना हैं उसकी बात भी क्यों ? उससे व्यर्थ परेशानी होती है और अपनी राह चलनेमें रुकावट आती है। इसीसे अन्य सब मार्ग बन्द कर देनेका मार्गही सर्वश्रेष्ठ है। कारण, उससे अपनी राह चलनेमें मदद मिलती है।

विनोबाजी 'गान्धी परिवार' के एक अभिन्न अंग है। पिछली जेल-यात्राके दिनोंमें सिवनी जेलसे गान्धीजीको लिखे गये आपके एक पत्रको जब जेल अधिकारियोंने यह कहकर रोक दिया कि 'जेलसे राजबंदी अपने रिश्तेदारको ही पत्र लिख सकता है, अन्यको नहीं और गांधीजी आपके रिश्तेदार नहीं हैं' तो आपने यह कहकर कहीं भी पत्र लिखनेकी सुविधा लेनेसे इन्कार कर दिया और कहा कि महात्माजी मेरे लिए किसीभी रिश्तेदारसे बढ़कर हैं और यदि मैं उन्हींको पत्र नहीं लिख सकता तो फिर मैं पत्र लिखनेकी सुविधा लेकर ही क्या करूंगा ?

किसी भी बडी-से-बडी बातको कम-से-कम शब्दोंमें कह जानेमें विनोबाजी सिद्ध-हस्त हैं। एक बार अपनी जेलयात्राके दिनोंमें मुलाकातके लिए आये एक व्यक्ति द्वारा जेलके विषयमें पूछनेपर आपने स्वयं उनसे ही प्रश्न पूछ-कर जेलकी बडीही सुन्दर परिभाषा की थी। आपने पूछा, "तुमने सरकस देखा है न ?" वे बोले, "हां !" आपने कहा, "तो बस ठीक है। जेलको उससे बिलकुल उलटा समझो। सरकसमें आदमी पशुओं पर शासन करता है और जेलमें पशु आदमी पर। समझे ?"

अभी-अभी जबलपूरमें भी एक ऐसी ही घटना घटी। विद्यार्थी कॉंग्रेसके अवसरपर परिषद्का उद्घाटन करनेके बाद जब आप निश्चिन्त हुये तो

विद्यार्थियोंने आपको आ घेरा और हस्ताक्षरकी मांग की। आपने कहा, "मैं कभी भी हस्ताक्षर नहीं करता।" लेकिन विद्यार्थी क्यों मानने लगे! उन्होंने हठ की। आपने लाख मना किया, लेकिन किसीने एक न मानी। आखिर आपने विद्यार्थियोंको विद्यार्थियोंकी तरह ही जवाब देनेकी तरकीब निकाली। बोले, "सुनो भाई, मैं बिना पारिश्रमिक लिये कोई काम नहीं करता।" सुनते ही विद्यार्थियोंके चेहरे खुशीसे चमक उठे। पांच रुपये लेकर हस्ताक्षर करनेकी बापूजीकी शर्त तो उनको मालूम थी ही। सोचा, देखते हैं आज विनोबाजी कितना लेते हैं! वे जो कुछ भी लेंगे आज तो हम हस्ताक्षर लेकर ही छोडेंगे, लेकिन इसी बीच एक सूत्र-बद्ध मन्तव्य ऊन्हें सुनाई दिया। विनोबाजी बोले, "तो सुनो भाई, मैं बिना पारिश्रमिक लिये कोई काम नहीं करता और हस्ताक्षरका कोई पारिश्रमिक लेता नहीं।" सुनते ही सारा विद्यार्थी-समाज निरुत्तर हो गया। यद्यपि उनको हस्ताक्षर नहीं मिले, तथापि उससे भी बडी जो बात मिली, वह थी विनोबाजीकी सूझ।

इसी प्रकार यदि आपको विनोबा-वाणीका रसास्वादन करना हो तो एक बार उनकी १'स्वराज्य-शास्त्र', 'विनोबाके विचार और 'विचार पोथी' पढ़ जाईये। आपने हजारों पृष्ठों वाली सैंकडों पुस्तकें पढ़ी होंगी; लेकिन कुछ सौ पृष्ठोंमें हजारों सूत्र-वाक्य कह जाने वाली इस तरहकी पुस्तकें आपको मुश्किलसे मिलेंगी। 'स्वराज्य-शास्त्र' में राज्य और स्वराज्यकी परिभाषा करते हुए वे लिखते हैं:—

"राज्य और है, स्वराज्य और। राज्य हिंसासे प्राप्त किया जा सकता है। स्वराज्य अहिंसाके बिना असंभव है। इसलिए विचारवंत राज्य नहीं चाहते, लेकिन "आओ, सब स्वराज्यके लिए जतन करें" कहकर तडफते रहते हैं। 'न त्वहं कामये राज्यं' और 'यते माही स्वराज्ये', ये उनके निषेधक और विधायक राजनैतिक उद्घोष होते हैं। 'स्वराज्य' वैदिक परिभाषाके अंतर्गत एक शब्द है। उसकी व्याख्या इस प्रकार की जाती है—स्वराज्य यानी प्रत्येकका राज्य—यानी ऐसा राज्य जो प्रत्येकको अपना लगे, यानी सबका राज्य अर्थात् 'रामराज्य'।"

स्वराज्यके साधनोंके विषयमें विनोबाजीका यह दृढ़ विश्वास है कि उसके लिए अहिंसा ही एकमात्र सर्व श्रेष्ठ उपाय है। इस बारेमें वे लिखते हैं, "इस महायुद्धमें असंगठित हिंसा और सुसंगठित हिंसा— दोनों या तीनों बेकार सिद्ध हो चुकी हैं। तब क्या किया जाय ? अहिंसाके प्रति अपनी निष्ठा दृढ़ करो। इसके लिये जनताकी ओर देखनेकी आवश्यकता नहीं। जनता कभी भी वादनिष्ठ या पद्धतिनिष्ठ नहीं होती। वह तो 'जीवननिष्ठ' होती है। जीवन सुचारु रूपसे चलता रहे तो वाद या पद्धति कैसी भी क्यों न हो, जनताको उसकी फिक्र नहीं होती। 'वाद' तत्त्व-ज्ञानी निकालते हैं, पद्धति व्यवहारी लोग बनाते हैं और समाज सहयोग देता है।

"हिन्दुस्थानकी जनता अहिंसक है। वह अहिंसावादी नहीं है। यह वाद तो उसके नामपर विद्वान सेवकोंको खडा करना है। वह अहिंसाकारी भी नहीं है। यह कार्य उसकी तरफसे उसके सत्याग्रही सेवकोंको करना है। अगर व्यक्तिगत रूपसे अहिंसामें हमारी निष्ठा हो तो अहिंसा जैसे प्रश्नके विषयमें, जनताके मत परिज्ञानकी जरूरत नहीं है। उसका 'स्वभाव-परिज्ञान' काफी है।"

" किसी न किसी कारणसे हमारी संस्कृति अहिंसक रही। तभी तो हमारी चालीस करोड जनता है। यूरोपियन राष्ट्र दो करोड या चार करोडकी ही बात कर सकते हैं, यहां चालीस करोड हैं। यूरोपकी लढ़ाई हिंसक साधनोंसे हिंसक उद्देश्योंके लिए लडी गई। हमारी लडाई अहिंसक साधनोंसे अहिंसक उद्देश्योंकी पूर्तिके लिये है।"

श्री विनोबाजी संपूर्णतः मानवधर्मी और अपने जीवनके जरिये सही समाजवादके प्रसारक हैं। श्रमकी प्रतिष्ठा और पूरी मजदूरीको ही आप समाजवादका मूल मानते हैं। गांधीवाद और समाजवादके समन्वयके सम्बन्धमें वे लिखते हैं:—

"साम्यवाद कृतिमें परिणत हुआ अद्वैत है। साम्यवाद जीवनमें उतरा हुआ वेदान्त है। गांधीवाद और साम्यवादका करते बने तो, समन्वय करो। साम्यवादको तुरन्त कार्यान्वित करनेकी सिफ़तका नाम 'अहिंसा' है। अहिंसा

हर एकसे कहती है कि "तू अपने आपसे आरंभ कर दे तो तेरे लिये आज ही साम्यवाद है। अहिंसाका चिन्ह है 'खादी'। खादी, यानी हाथका कता हाथका बुना और पूरी मजदूरी देकर बनवाया हुआ कपडा। पूरी मजदूरीके सिवाय समाजवाद या साम्यवादका दुसरा कोई इलाज नहीं। खादीके द्वारा द्रव्यका वितरण होता है।"

"अब तक हम यह नहीं समझ पाये हैं कि पैसे गंवाकर हृदय कमानेमें भी कुछ चतुराई है, जब तक कम-से-कम पैसे देनेमें चतुराई मानी जाती है तब तक गांधीजीकी बात समझमें नहीं आ सकती और न अहिंसाका प्रचार ही हो सकता है।"

सब मिलाकर कहें तो विनोबाजी समन्वयके आचार्य हैं। ज्ञान और कर्मका, विचार और आचारका, व्यक्ति और समाजका, धर्म और राजनीतिका समन्वय ही उनका लक्ष्य है। जीवन और साहित्यके सम्बन्धमें उनके यही विचार हैं। इस सम्बन्धमें भी कुछ सूत्रबद्ध विचार देखिये :—

"जिससे जनताका चित्त शुद्ध होता है, वही उत्तम साहित्य है। पोथीका कुआ डुबाता भी नहीं है और पोथीकी नैया तारती भी नहीं है। वेदोंके अक्षर पोथीमें मिलते हैं, किन्तु उनका अर्थ जीवनमें खोजना है। मन भर चर्चाकी अपेक्षा कण भर आचरण श्रेष्ठ है। ज्ञानवंत प्राणी ज्ञानको पद-पद पर जीवनमें उतारता है। 'जीवन' विचार, अनुभव और श्रद्धाका घनफल है। ऋषिसे दर्शन, तत्वज्ञासे ज्ञान और सन्तोंसे अनुभव करना चाहिये। सृष्टि यानी देवताकी आरती, पूजन यथासांग हो चुका है, अब सिर्फ नमस्कार करना ही बाकी है।"

विनोबाजीके शब्दोंमें हम प्रभुसे निरंतर प्रार्थना करें कि "हे प्रभो, टेकडी सरीखे उच्च रहनेमें मुझे मजा नहीं आता मेरी मिट्टी आसपासकी जमीनमें फैल जाय, उसीमें मुझे आनंद है।"

---

१ ये तीनों पुस्तकें सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली से मिल सकती हैं।

विनोबा

[लेखकः- प्रो० प्रभाकर माचवे]

विनोबा बीसवीं सदीके ऋषि हैं । गत तीस वर्षोंसे वे गांधीके अनन्य अनुयायियोंमें रहे हैं । पर वे आकृतिके अनुयायी नहीं हैं, कृतिके अनुयायी हैं । जो चाहा, उसे सोचा; और जो एक बार निश्चयपूर्वक विचारा, वही कर डाला, यह विनोबाके जीवनकी विशेषता रही है ।

विनोबा व्याकरणाचार्य हैं; (व्याकरणाचार्य तो प्रतिवर्ष कई होते रहते हैं) पर वे नियमित सूत कातते हैं और स्वावलंबनमें विश्वास करते हैं । ऐसे भी लोग कई मिल जायेंगे, परन्तु विनोबाकी वाणीमें जो एक प्रकारकी ओजस्विता है, वह दुर्लभ है । वह उनकी एकान्त जीवन-साधनाका, फलाशा छोड़कर की हुई कर्मो- पासनाका, उनकी श्रम-पूजाका दृश्य फल है । उनकी साधना एक सर्व-संग परित्यागी और नित्या-नित्य वस्तुविवेकी मुमुक्षुकी साधना है । जीवनकी साधना वाणीको बल अर्पण करती है । 'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः' । इसी साधनाका एक पहलू, अपनी हिंदुस्तानी भाषाके कवि स्वामी रामतीर्थके शब्दोंमें मिलता है—

सब रिश्ते-नाते तोड़ेंगे । दिल इक आतम-संग जोड़ेंगे ।
सब विषयों से मुंह मोड़ेंगे । सिर सब पापों का फोड़ेंगे ॥
हम रूखे टुकड़े खायेंगे । भारत की बात बनायेंगे ॥

(रामवर्षा २६८-६९)

इसी साधनाका; जो निर्वैर प्रतिकारका ईसा-सा अहिंसक तेज व्यक्तिमें पैदा कर उसे गीताके शब्दोंमें 'अनिकेत और स्थिरमति' बनाता है । दूसरा

पहलू कवींद्रके शब्दोंमें मिलता है, जब वे अपने ग्रंथ 'साधना' में 'आत्माके प्रश्न' पर कहते हैं:—

"The freedom of the seed is in the attainment of its **Dharma,** its nature and destiny of becoming a tree; it is the nonaccomplishment which is its prison. The sacrifice by which a thing attains its fulfilment is not a sacrifice which ends in death; it is the casting off of bonds which wins freedom. When we know the highest ideal of freedom, which a man has, we know his **Dharma,** the essence of his nature, the real meaning of his self."

अर्थात् बीजकी स्वतन्त्रता वृक्ष बननेमें है, जो कि उसका सहज धर्म है। इस धर्मकी पूर्ति न होना ही उसकी परतंत्रता है। जो त्याग वस्तुको उसकी पूर्णता तक पहुँचाता है, उसकी परिणति मृत्युमें नहीं होती। वह तो स्वतन्त्रताकी प्राप्तिके लिए बन्धनोंको तोड़ फेंकना है। जब हम मनुष्यकी स्वतंत्रताकी चरम अवस्थाको जान लेते हैं तो हम उसके धर्मको पहचान लेते हैं, जोकि उसकी प्रकृतिका सार, उसकी आत्माका यथार्थ ज्ञान या भाव है। विनोबा इसी सच्चे अर्थमें मुक्त हैं। वेदोंका आधार देकर विनोबाने कहा है कि 'व्यक्तिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये,' याने जहां सबको मत-दानका अधिकार है और जिसकी बहुसंख्या अल्पसंख्याकी रक्षाके लिए सावधान है, वह स्वराज्य है। इसीलिए विनोबाके सूत्र प्रसिद्ध हैं, 'स्वराज्यकी कमी सुराज्यसे पूरी नहीं हो सकती।' और स्वराज्यका सवाल फाकाकशीसे मुक्त होनेका सवाल है। जैसा कि तिलक कहते थे, वह दाल-रोटीका सवाल है।' विनोबा इसी मुक्तिकी खोजमें दरिद्रोंसे तन्मय हुए हैं। इसी मुक्तिकी भावनासे वे आजीवन निष्ठापूर्ण ब्रह्मचारी रहे हैं। और यही जीवन-गत संयम है, जो उनकी वाणीमें अभिव्यक्त हुआ है, और जिसने उन्हें टंड पर बेहद प्रभावी अंग बना दिया है।

वर्धासे पांच मील दूरी पर एक गांव है पवनार। वहां विनोबाजीका आश्रम है। पर वहां जानेसे पूर्व महिलाश्रम और नालवाडी ये सब

विनोबाजीकी रचनाएँ हैं। विनोबामें रचनात्मक कार्यक्रमसे अटूट स्नेह और महान त्याग-वीरता है। दुबली-पतली देहयष्टि, पहले हड्डियोंके कंकाल जैसे दीखने वाले विनोबा, अब नियमित व्यायामसे स्वस्थ हो गये थे (जेलयात्रासे पूर्व)। जेलमें जब कि कई 'ए' और 'बी' क्लासके सुख भोगते थे, विनोबाने स्वेच्छासे 'सी'वर्गका आनन्द उठानेका प्रयत्न किया। मितभाषिता, निरन्तर सेवारत रहना और समयका प्रतिक्षण श्रम-पूजामें व्यतीत करना यह विनोबाकी महानताकी कुंजी है। कठोरसे कठोर देहदण्डकी आंचमेंसे पवित्र होकर विनोबाकी आत्मा कुन्दन-सी निखरी है।

संकल्पकी दृढ़ताने विनोबाके व्यक्तित्वमें चमत्कारी साहस और अपूर्व बातें पैदा कर दी हैं। ५० वर्षकी उम्रमें अरबी जैसी कठिन भाषा उन्होंने न सिर्फ सीखनेकी कोशिश की या अपनाई, परन्तु मौलाना आजादके सामने उन्होंने फातेहा पढ़कर सुनाया, पूरे अरबी उच्चारणों सहित। इसके अलावा उन्होंने कताईका वैज्ञानिक टेकनीक (शास्त्र) निर्माण किया, कार्यकर्त्ताओंका संगठन किया और आजका महाराष्ट्र-चरखा-संघ, अप्पा साहब पटवर्धन जैसे महदुद्योगी कार्यकर्ताओंको जो निर्माण कर पाया है, और प्रतिवर्ष प्रगति पथपर है, उसका अधिकांश श्रेय विनोबाको है। विनोबा समानधर्मी और सौ फीसदी राष्ट्रीय वृत्तिके हैं।

विनोबाका व्याख्यान जिन्होंने सुना हो, वे उसे भूल नहीं सकते। उसमें दर्द होता है, मगर चीख नहीं होती, दृष्टान्तोंका सहज व्यवहार होता है, चमत्कार या पांडित्य प्रदर्शन नहीं। विनोबा नहीं बोलते, जान पड़ता है उनका अन्तस्तल शब्दोंमें उमड़ पड़ता हो। उनके समग्र व्याख्यानोंका संग्रह अभी हिन्दी या मराठीमें अनुपलब्ध ही है। जेलवाससे हालमें उन्होंने खादी-पत्रिकामें रचनात्मक कार्यक्रमका जो एक वर्तुलाकृति स्पष्टीकरण भेजा था, वह उनके वैज्ञानिक, व्यवस्थित मास्तिष्कका परिचायक है; वैसे ही गीताका समश्लोकी मराठी अनुवाद उनकी काव्य शक्ति का।

उनके विचारोंमें जहां एक ओर ऊंचे दार्शनिक भाव मिलेंगे, वहीं दूसरी ओर व्यावहारिक सुझाव भी मिलेंगे। जहां एक ओर तीखा व्यंग

मिलेगा, वहां आर्द्रताका अंग भी मिलेगा। जहां वे कविके सम्बन्धमें कहते हैं—'कविको तो आत्मिक प्रेमसे सर्व सृष्टिको आच्छादित कर देना चाहिये। उसी प्रकार उसे सृष्टिके वैभवसे अपनी आत्माको भी सजानेकी कला मालूम होनी चाहिए।' वहीं वे वैदिक ऋषियोंके आधार पर कहते हैं—ग्रामे अस्मित् अनातुरम्—हमारे गांवमें बीमारी न हो। या वे युद्ध टालनेका सही उपाय कहते हैं—कलकत्तेमें जापानी लोग बम बरसायें, तो हम आत्मरक्षा किस तरह करें, इसकी तरकीबें सोची जा रही हैं। लेकिन इनसे क्या होनेवाला है?.......यदि हम एक ओर जापानका सस्ता माल खरीदकर उसे मदद करते रहेंगे और दूसरी ओर उसके बम न गिरें इसकी कोशिश करेंगे, तो वे बम कैसे टलेंगे? 'बम या युद्ध टालने का वास्तविक उपाय यही है कि हम अपनी आवश्यक चीजें अपने आसपास तैयार करायें और उनके उचित दाम दें।' विनोबाके विचारों पर इस प्रकार कहते रहना एक स्वतन्त्र पुस्तककी सामग्री जुटाना है।

विनोबाको स्वयम् गांधीजी आदर देते हैं। यही कारण है कि गांधी-आश्रमकी सायं-प्रातः प्रार्थनामें विनोबा रचित मराठीके दो अनुष्टुप छंद प्रतिज्ञाकी तरह दुहराए जाते हैं। यहां हम भी उन्हें दुहरालें—

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह,
शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र-भय-वर्जन,
सर्वधर्मीसमानत्व, स्वदेशी, स्पर्शभावना,
ही एकादश सेवावीं नम्रत्वें व्रतनिश्चयें ॥

विनोबाजी की स्मृतियाँ

[लेखकः— गोपाळराव काळे]

मेरे लिये ये स्मृतियाँ पवित्र हैं। पवित्र चीजें यद्यपि गुप्त नहीं होतीं फिर भी प्रगट करनेकी भी नहीं होती है। लेकिन विनोबाजीके संबंधकी जानकारी अब राष्ट्रकी मिलकियत हो गअी है। अैसी लोगोंकी धारणा दीखती है। १९४२ की नागपूरकी जेलयात्रामें, वहाँ अेकबार कल्पना निकली कि हरअेक अपनी अपनी जीवनी बयान करे। अिसके लिये कुछ लोग चुने गये जिनमें मैं भी अेक था लोगोंको मेरी जीवनी थोड़ेही सुननी थी? उस निमित्तसे विनोबाजीके बारेमें बहुत कुछ बातें मैं बताउंगा, अैसी उनकी अपेक्षा थी। वह मुझे पूरी करनी पड़ी। अिस तरह ये स्मृतियाँ शब्दोंमें प्रगट हुअीं। अिसका लाभ उठाकर मेरे मित्र श्री दादा धर्माधिकारी और श्री भाऊसाहब माड़खोलकरने मुझे कुछ लिखनेका आग्रह किया, उसीका फल ये प्रकाशित की जानेवाली स्मृतियाँ हैं।

अेक सनकी क्रांतिकारी लड़का

विनोबाजीसे मेरा प्रत्यक्ष परिचय १९१० में हुआ। उसके पहले अेक अत्यंत बुद्धिमान्, चारित्र्यवान् क्रांतिकारी स्वभावका अपनी माताको नियमित रूपसे 'केसरी' पढ़कर सुनानेवाला और कुछ सनकी लड़का, अिस तरह मैं उनको पहचानता था। बड़ौदामें मेरे पिताजीके मामाके बाडेमें विनोबाजीके पिताजीके मित्र डॉ. जोगळेकर रहते थे। उनके वहाँ विनोबाजी आया करते थे। वैसे ही पुरोहित नामके विनोबाजीके मित्र जो कला भवनमें आते थे वे भी अिसी बाडेमें आते थे। उनके निमित्तसे विनोबाजी कभी कभी वहाँ आते थे। उस समय मैंने उनको देखा था।

अकस्मात मुलाकत

लेकिन यह पहचान दूरदूरसे थी। प्रत्यक्ष परिचय हम दोनों अंग्रेजी चौथी कक्षामें थे तब हुआ। विनोबाजी हमारे पड़ोसकी गलीमें रहने आये थे। अेक दिन वे घूमने निकले तब मेरी उनसे अकस्मात मुलाकात हो गई। उन्होंने पूछा "क्या घूमने आओगे?" मैं उनके साथ हो लिया। बस! दूसरे दिनसे उनका हमारा अड्डा बन गया। और हमारे यहां भी उनका आना जाना शुरू हुआ।

बहस की धुन

विनोबाजीको घुमनेका बड़ा शौक है। एक समयमें पांच-सात मील उनके लिये कुछ नहीं है। दिनमें कमसे कम पंधरा मीलकी रपेट हमारी होती ही थी। कभी कभी तो दिनके बारा बजे पूरी धूपमें घुमनेकी उन्हें लहर आ जाती तब हम लोगोंकी बडी फजीहत हो जाती। लेकिन इस घूमनेमें हमें समयका कोई भान ही नहीं रहता। विनोबाजीके बोलनेका और बहसका प्रवाह अखंड चलता है। घरका भी किसीको ध्यान नहीं आता। कभी कभी चर्चा इतनी दिलचस्प हो जाती कि हमारे घरके गलीके चौराहे पर पहुँचने पर भी वहीं खडे खडे घंटों बहस चलती। हमारे चारों और भीड अिकट्ठा होजाती लेकिन हमारा उस तरफ ध्यान हो तब न? घरके लोग भोजन आदि-से निपटकर सोनेकी तयारीमें लगते तब कभी हम घर पहुँचते। लेकिन हम सारे ही अपने अपने घरोंमें लाडले थे या यूं कहिये कि हम लोगोंके स्वभावसे घरके लोग परिचित थे। अिसलिये हमें कभी किसीने कुछ कहा नहीं। और हमारे अिस क्रममें कभी किसीने बाधा नहीं डाली।

बड़ौदाके ग्रंथालयमें

अिस तरह घूमनेमें जैसे हमारा काफी समय जाता था, वैसेही स्टेट लायब्रेरी और सेन्ट्रल लायब्रेरीकी रीडिंग रूममें किताबोंको देखनेमें भी काफी समय जाता था। बड़ौदामें सेन्ट्रल लायब्रेरी नअी खुली थी। और सब लोगोंके लिये खुली हुअी लायब्रेरी उस समय सारे हिन्दुस्तानमें वही थी,

अैसा मैं मानता हूँ। अिसलिये हम लोगोंके लिये यद्यपि हम उम्रमें छोटे थे मानों खजाना ही खुल गया। उसका हमने अपनी दृष्टिसे पूरा फायदा उठाया। घूमना, बहस करना और लायब्रेरीमें बैठना अिसके आगे स्कूलमें पढाअीकी किसीको परवाह नहीं थी। स्कूलमें हम मामूली हाजरी देते थे। और हममेंसे बहुत सारे बुद्धिवान् थे अिसलिये थोड़े दिनके पढाअीसे हम पास होकर उंची श्रेणीमें दाखिल होते थे। मॅट्रिककी परीक्षाका भी यही हाल हुआ।

व्यापारकी भाषा

विनोबाजीके पिताजीने उनको यूरोपकी व्यापारकी भाषाके जोर पर फ्रेन्च लेनेके लिये बाध्य किया था। हम अहमदाबादमें मॅट्रिककी परीक्षाके लिये गये। लेकिन मॅट्रिकके लिये नियुक्त की गअी फ्रेंच किताबें विनोबाजीने तब तक खोल कर भी देखी नहीं थीं। भाषाओंकी रचनाकी तुलनात्मक पद्धति विनोबाजीको बहुत जल्दि समझमें आ जाती है। जिससे फ्रेन्च भाषाके पहले के अल्पपरिचयसे दो दिनमें उन्होंने सारी किताबें देखली और पास हो गये।

गणित पर-ब्रम्ह

आग्रही स्वभावके कारण विनोबाजी अेकबार कॉलेजकी फर्स्ट अीअर की परीक्षामें फेल होते होते बचगये। गणित उनका प्यारा विषय है। करीब-करीब उनका पर-ब्रम्ह ही कहो। उसमें किसीके सामने वे मात नहीं खाते। परीक्षा-पत्रमें पहला ही प्रश्न बहुत कठिन था। विनोबाजीने प्रश्न कमसे ही छुडानेका हट रक्खा। अिसलिये उनका समय पहले प्रश्नमें ही पूरा होते आ रहा था। अंतमें अस्सी मार्क प्राप्त करनेकी शक्यता होते हुये भी वे तीस मार्क पाकर जैसे तैसे पास हो गये।

लेकिन अिसतरह मैं लिखता जाऊं तो उसका अंत ही नहीं आयेगा। अिस लिये कुछ अंकुश लगाना चाहिये।

"मेरा चरित्र कोअी न लिखें"

मेरा चरित्र कोअी न लिखें अैसा विनोबाजी हमेशा कहते हैं। उनका

कहना है कि उनका बहुत सारा चरित्र आंतरिक है। बाह्य घटनायें बहुत थोड़ी हैं। अगर "मेरा चरित्र ही लिखना है तो मुझे ही आत्म चरित्र लिखना पड़ेगा।" विनोबाजीका यह कथन बिल्कुल सही है। उनकी और हमारी आंतरिक अवस्थामें पहलेही बहुत अंतर था। अब तो वह बेहद बढ़ गया है। विनोबाजीका आध्यात्मिक विकास बड़ी तेजीसे हो रहा है। उस हिसाबसे हम लोग— कमसे कममें —करीब करीब जहां थे वहीं हैं। अिसलिये उनका चरित्र लिखनेका मुझे तो जरा भी अधिकार नहीं है। लेकिन यह स्मृतियाँ उनका चरित्र नहीं हैः न ये उनके चरित्र-पथके Mile Stones ही है। उनके चरित्र मार्ग परके बीच बीचके, लेकिन पाठकोंको शिक्षा-प्रद होंगे असे दृश्य हैं।

बुद्धिपर हृदयकी विजय

विनोबाजीके साथ परिचय होनेके पहिले स्वामी विवेकानंदजीका एक वाक्य मैंने पढ़ा था। जिसमें उन्होंने लिखा है की 'मनुष्यको शंकराचार्य जैसी बुद्धी और भगवान बुद्धके जैसा हृदय मिलना चाहियें'। विनोबाजीको देखनेके बाद उस वाक्यकी याद कुछ मात्रामें मुझे आती है। इतनी तेज बुद्धिपर हृदयने जो विजय प्राप्त की है उसको देखकर आश्चर्य लगता है। सूक्ष्म तर्कके साथ मार्मिक रसिकता, गणितके साथ उँचे दर्जेका काव्य इस तरहका संयोग विनोबाजीमें दिखाई देता है। और गीताके सातवे अध्यायमें "ज्ञानीही परम भक्त" और अठारवे अध्यायमें 'भक्तिके द्वारा वह मुझे पहचानता है' अिन दो वाक्योंमें जो समन्वय है, वह विनोबाजीको देखनेसे जल्दी समझमें आता है। बुद्धि और हृदयका यह समीकरण शायद ही देखनेमें आता है' हस्त मुद्रिकापर मेरा, वैसे ही विनोबाजीका जरा भी विश्वास नहीं है। और विनोबाजी तो अपना हाथ किसीको देखनेभी नहीं देते हैं। फिर भी मेरे निकट परिचयके कारण उनका हाथ मुझे अनायास देखनेको मिल जाता है। और मैंने देखा है कि उनके हाथपर बुद्धिकी और हृदयकी रेखा एकही हैं।

सहजस्फूर्त ब्रम्हचर्य

विनोबाजीका ब्रम्हचर्य भी सहजस्फूर्त है। उसमें किसी दूसरेसे प्रेरणा प्राप्त करनेकी उन्हें जरूरत नहीं पडी। अलबत्ता समर्थ रामदास स्वामीका उदाहरण उनके सामने था। और बचपनमें 'दासबोध' उनका प्रिय ग्रंथ था। अेकबार उन्होंने पढ़ा कि ब्रह्मचारीको जूता नहीं पहनना चाहिये और गद्दी पर नहीं सोना चाहिये, तबसे उन्होंने जूता और गद्दी त्याग दी। गर्मीके दिनोंमें साबरमतीकी रेतमेंसे चलते हुअे भी उन्होंने जूता नहीं पहना। वर्धा आनेपर कई सालोंके बाद स्वच्छताकी दृष्टिसे वे जूता पहनने लगे। उपनयन मुक्ति (सोड मुंज) के समय मामा अपनी लड़की बटूको देनेकी बात करता है, उस वाहियात पद्धतिका पालन करनेसे विनोबाजीने साफ अिन्कार कर दिया।

'मस्त' वृत्ति

विनोबाजी आजकल नाप-तौल कर और शास्त्रीय दृष्टि रखकर आहार लेते हैं, यह सब लोग जानते ही हैं। लेकिन बचपनमें भोजनके तरफ उनका जरा भी खयाल नहीं रहता था। जो थालीमें परोसा जाता, खाकर उठ जाते। कअी बार माँ उन्हें कहती 'विन्या' दाल खारी हो गअी थी, तूने तो कुछ बताया ही नहीं।' लेकिन विन्याके ध्यानमें वह बात आवे तब न? माँ पियर जाती तब विनोबाजीके पिताजी और भाई भोजनालयमें भोजन करने जाते। वहाँ भी विनोबाजीकी यही हालत थी। पिताजी बाहर गांव जाते समय विनोबाजीके पास आम खानेके लिये कुछ पैसे दे जाते; लेकिन उसमेंसे एक पैसा भी खर्च न होकर सारे पैसे वैसे ही रह जाते। क्योंकि वे अपनी ही मस्तीमें मग्न रहते।

'तेरी माँ क्या मेम थी?'

निस्पृहताके साथ साथ उनकी जबानमें उस समय कुछ कांटा रहता था। कोई अगर उनसे पूछे 'नाखून और बाल इतने क्यों बढ़ाये है?' तो फटसे उलटा सवाल करते, 'क्या आप नाअी हैं?' कंधेपर कुरता डालकर बड़ोदा

जैसे शहरमें भी वे रोकटोक घूमते । हम भी उनके साथ अिसके आदी बन गये थे । और उनके साथ वैसे घूमनेमें कुछ हिचकिचाहट नहीं मालूम होती थी । कोई अकड़कर अंग्रेजी बोलने लगे, तो पूछते 'क्या तेरी माँ मेम थी ?' इस परसे कोई गलतफ़हमी न करें । मातृभाषाका ज्वलंत अभिमान होते हुयेभी अंग्रेजीकी शुद्धताके बारेंमे खासकैरके अंग्रेजी उच्चारणके बारेंमें उनके जितना आग्रह रखनेवाला कोई दूसरा मेरे देखनेमें नहीं आया है । और आज ही नहीं बल्कि बचपनमें भी उनका यह आग्रह था । "एको शद्बः सम्यक ज्ञातः सम्यक प्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुक् भवति" यह उनका सूत्र था । और अिसीलिये कअी भाषाओंका ज्ञान वे जल्दी हासिल कर सके हैं ।

सौ मार्क कैसे दिये जाँय ?

दासबोध, मोरोपंतका आर्याभारत और केकावली ये ग्रंथ उस समय विनोबाजीके प्रिय ग्रंथ थे । आर्या भारतका कुछ हिस्सा कंठ था । केकावली इतनी उँची आवाजमें बोलते कि सारी गली गूंज उठती । इसके अलावा जप्त की गई किताबोंमेंसे मॅझिनीके चरित्रको सावरकरने लिखी हुई प्रस्तावना अित्यादि वे हम लोगोंको जोरसे सुनाते । १९०८ में 'काळ,' 'केसरी' आदि अखबार और बड़ौदा स्टेट लायब्रेरीके सारे मराठी ग्रंथ पढ़कर विनोबाजीने अपनी आँखें इतनी खराब करली कि आजके जैसा योग-युक्त रहन-सहन रखकर भी आँख सुधर नहीं सकी हैं । उनके चश्में का नंबर मायनस आठ हैं । इस परसे पाठक उनकी आँखोंकी हालतका अंदाजा लगा सकते है । मराठीमें विनोबाजी अद्वितीय हैं, यह कहनेकी आवश्यकता नहीं हैं । कअी बार शिक्षक उन्हें निन्यानबे मार्क इसीलिये देते कि सौ के सौ पूरे कैसे दिये जाय ?

विद्यार्थी मंडलकी स्थापना

१९१४ में हम लोगोंने विद्यार्थी मंडल नामकी एक संस्था स्थापना की । उसकी ओरसे हर हफ्तेमें हममेंसे किसी एकका व्याख्यान होता था । और

उसके बाद चर्चा चलती थी । इस मंडलकी शुरुआत पहले श्री थत्रेजीके मकान हुई, बादमें वह हमारे घरपर होने लगी। और अंतमें किरायके अलग मकानमें मंडलकी सभा होने लगी। हमारे मंडलमें अिने गिने ही विद्यार्थी थे। क्योंकि हमारा मंडल उग्र या जहाल विचार रखनेवाला समझा जाता था। और वैसा वह था भी । उस समयके हमारे स्वभावके अनुसार हम दूसरे मंडलो पर टकिा प्रहार करनेमें हिचकते नही थे। इस मंडलकी ओरसे हनुमान जयंती, शिवाजी जयंती, गणपती उत्सव और दासनवमी जैसे उत्सव मनाये जाते थे। भिक्षा मांगकर मंडलने अपना अेक ग्रंथालय भी करलिया था। उसमें सोसो उपयोगी पुस्तकें थी। जिनमें मोलस्वर्थ क्यान्डी आदि लोगोंके अैसे कोष भी थे जो शायद ही कहीं मिलते। यह ग्रंथालय आखिर हमने साबरमतीके सत्याग्रह आश्रमको भेंट कर दिया।

अग्नि जैसा प्रखर पुरुष

लेकिन कहनेकी बात दूसरी ही है । विद्यार्थी मंडलमें विनोबाजीके व्याख्यान यद्यपि थोडे लोगोंके सामने होते थे फिर भी वैसे व्याख्यान उनके मुँहसे भी मैंने आज तक नहीं सुने। मॉझिनीपर दिया हुआ उनका व्याख्यान अैसा अद्भुत था कि आज बत्तीस सालके बाद भी अैसा लगता है मानो हम अब भी उसे सुन रहे हैं। उस समयकी उनकी भाषाका आवेश और वक्तृत्वता की झंझनाहट कुछ और ही थी। बादके दिनोंमें उनका वक्तृत्व शांत होता गया। आज तो वह बिलकुल ही धीर गंभीर बनगया हैं। पहलेके उनके वक्तृत्वकी कल्पना भी आज नहीं की जा सकती। वैराग्य के प्रारंभ कालमें मनुष्य अग्निके जैसा प्रखर होना चाहिये। वैराग्य परिपक्व होनेके बाद उसमें अपने आप मृदुता आ जाती है। अपरिपक्व दशामें जो मनुष्य मृदु रहता है, वह दूसरेके वश होनेका संभव रहता है। अिसलिये कठोर वृत्ति वैराग्यकी दशामें दोष नहीं; बल्कि गुण ही हैं। लेकिन यह कठोरता लोगोंके मनमें गलतफहमी पैदा करती हैं । विनोबाजी के बारेमें अिस तरहकी काफी गलतफहमी हैं। लेकिन जो लोग उनके निकट

पहुँचे हैं उनके दिलसे यह गलतफहमी तुरंत दूर हो गयी हैं, यह मैं जानता हूँ। उनके पहलेके और आजके स्वभावमें तथा वृत्तिमें बहुत ही अंतर हैं, यद्यपि वह उपरी हैं। आजकी सरलता पहले भी थी। फरक अितना ही है कि उसका आजका बाह्य स्वरूप अलग ढंगका हैं।

"वहाँ 'वही' चाहिये"

१९१३ के नवंबरमें हम लोग मॅट्रिक पास हुये तबसे ही विनोबाजीके मनमें घर छोड़कर निकल जानेका विचार आने लगा। वैसे घरमें कोअी तकलीफ तो थी ही नहीं, बल्कि सब तरहसे अनुकूलता ही थी। पिताजी अत्यंत शास्त्रीय बुद्धिके और समजदार। माँ अत्यंत भक्तिशील और विनोबाजीकी वृत्तिके अनुकूल। देश-सेवा करनेकी अगर विनोबाजीकी अिच्छा होती तो उन्हें किसी तरहका विरोध घरसे नहीं होता, लेकिन उन्हें किसी प्रकारका बन्धन या आसक्ति पसंद नहीं थी। उनकी दृष्टि केवल देशसेवाकी नहीं थी, साधना करनेकी थी। मित्रोंके पीछे भी वे घर छोड चलनेके लिये पडते। मैने दलीलकी कि देश-सेवाके लिये मुझे बी. ए., एल एल. बी., पास करनी चाहिये। दूसरोंने भी अैसीही कुछ दलीलें दी। अिस तरह दो साल बीत गये। बीचमें मेरे विवाहका प्रश्न निकला। मैं बडौदामें अपने नानीके साथ रहता था। अिसलिये पिताजीको मेरी रायकी कोअी कल्पना नहीं थी। उन्होंने मुझे बिना पूछे शादी तय कर दी। मैंने अिनकार किया, पिताजीको लगा कि मुझे लड़की पसंद नहीं है। लेकिन वह प्रश्न नहीं था। मेरी जिन्दगी भरमें पिताजीने मुझे अेक शब्दसे भी दुःख नहीं दिया। अिस-लिये आखिर उनके कहनेको मैंने मंजूरी दे दी। विनोबाजी बहुत खफा हुअे और बोले—'तेथें पाहिजे जातीचे। अेरागबाळाचे काम नोहे'। लेकिन मुझे उन्होंने छोड़ा नहीं। 'गोप्या' के नामसे पुकार कर मेरे घर पहले जैसा आना जारी रखा।

'विनोबा'— बापूका रखा हुआ नाम

मेरी नानीको मेरी शादीके बाद विनोबाजी मुझे गोप्याके नामसे पुकार

यह बात खटकती थी। लेकिन वह तो यही कहती कि "तेरा वह 'भाव्या' आया था।" हम लोग विनोबाजीको अक्सर 'विनायक' के नामसे पुकारते थे। आश्रममें आनेके बाद बापूजीने उनका नाम 'विनोबा' रखा। आश्रममें पांडोबा नामके अेक सज्जन थे। उन्हींके नाम परसे अिस ढंगका नाम बापूजीने रखा। वही आगे चल पड़ा।

आश्रमका जड भरत

विनोबाजी बनारसमें थे तभी बापूजीके आश्रमकी पत्रिका उनके देखनेमें आयी और वे आश्रमकी ओर आकृष्ट हुये। अिसके बाद बापूजीसे उनका पत्र-व्यवहार हुआ। और वे आश्रममें दाखिल हुअे। उस समय आश्रम कोचरबमें था। आश्रममें शुरूमें जडभरतकी तरह केवल बुनाअी करके रहते थे। बापूजीके प्रवचनोंका श्रवण करते; लेकिन बापूजीने विनोबाजीको ठीक पहचान लिया था।

गीतापर प्रवचन

कुछ दिन आश्रममें बिताकर विनोबाजीने एक सालकी छुट्टी ली। छे महिने वाअीके प्राज्ञ पाठशालामें रहकर नारायण शास्त्री मराठेके पास ब्रह्मसूत्रका अभ्यास किया। बाकीके छे महिने महाराष्ट्र भरमें गीता पर प्रवचन दिये। अिन प्रवचनोंकी खास बात यह थी कि प्रवचनकी पत्रिकायें वे ही खुद बांटते थे। एक जगह तीन दिनसे अधिक मुकाम प्रायः नहीं करते थे। पहले दिन श्रोताओंकी संख्या कम रहती। लेकिन दूसरे और तीसरे रोज काफी भीड हो जाती। कभी कभी सात दिन तक मुकाम बढ़ाना पडता था। लेकिन जिस दिन छुट्टी समाप्त हुअी ठीक उसी दिन वे आश्रममें पहुँच गये।

अैसे ब्राह्मणका स्पर्श भी न हो

आश्रममें जानेके बाद भी विनोबाजीने मित्रोंका पीछा नहीं छोडा। १९१८ में, उन्होंने मुझे साबरमतीके राष्ट्रीय शालामें बुलाया। लेकिन

अिन्फ्युअेंझासे बीमार पड़नेके कारण और बी. ए. एल एल. बी. का भी लोभ न छुटनेके कारण मैं वापिस चला आया। उसी साल विनोबाजीकी माताका देहान्त हो गया। बापूजीने माताकी सेवाके लिये विनोबाजीसे जानेका अनुरोध किया। उन्होंने माँकी उत्तम सेवा की। लेकिन स्मशान भूमिके ब्राह्मणके हाथसे अग्नि दिलवानेका प्रश्न पैदा हुआ। अिसलिये विनोबाजीने स्मशानमें जानेसे अिनकार कर दिया और घर पर ही गीता और उपनिषद का पाठ किया। लोगोंने उनकी काफी भर्त्सना की। पिताजीने भी काफी समझाया लेकिन विनोबाजी तत्त्वच्युत नहीं हुये। अैसा ही प्रसंग उनका मित्र बेडेकर बनारसमें गुजर गया तब पैदा हुआ था। उस बहादुरने विनोबाजीसे मरनेके पहले कह रखा था कि मुझे 'भडाग्नि' दो लेकिन डोम या वैसे ही ब्राह्मणके हाथका स्पर्श न होने दो।

'सूर्याजीकी तरह रस्सा काट दो'

१९२० के अगस्तमें महात्माजीने असहकारताका आन्दोलन शुरू किया मेरी एलएल. बी., की फायनल परीक्षाको केवल दो महिने बाकी थे। टर्म भर चुका था। फार्म भी भर दिया था। अब सिर्फ परीक्षामें बैठना ही बाकी था। लोकमान्य तिलकका दर्शन लेनेके लिये विनोबाजी बंबअी आये थे। मैं भी उनके साथ सरदार गृहमें गया था। दूसरे रोज हमेशाकी तरह वे मेरे घर आये और पूछने लगे "अब वकालत करके क्या करोगे! वकीलोंको तो अब वकालत छोड़ना है।" मैंने कहा "फार्म भर दिया है, पैसे भी रवाना हो गये है। परीक्षा देने दो, मैं वकालत नहीं करूंगा"। उन्होंने कहा "नहीं, सूर्याजीकी तरह रस्सा काट ही डालना चाहिये। तुझे बादमें वकालत करनेका मोह उत्पन्न होगा। परीक्षामें नहीं बैठना है।" बस। देश-सेवाके लिये एलएल. बी., बनना चाहिये अिस दलीलको अवकाश ही नहीं था। अिस लिये मुझे चुप रहना पडा। मैने उनका कहना मंजूर किया। पिताजीके पास गया। उनके सारे वाकबाण सहन किये और कुटुंबके साथ आश्रममें दाखिल हो गया। मेरे पहले ही श्रीधोत्रेजी और श्रीमोघेजी

आश्रममें पहुँचे थे। विनोबाजीके दो भाअी अिसके पहले ही विनोबाजीके मार्गका अनुकरण करके आश्रममें पहुँच चुके थे।

विनोबाजीको श्री जमनालालजी वर्धा ले आये।

१९२१ की वर्ष-प्रतिपदाके दिन श्री जमनालालजीने बापूसे अनुरोध करके विनोबाजीको वर्धा बुला लिया। उनके साथ शुरूमें श्री धोत्रेजी, वल्लभ-स्वामी और कुछ विद्यार्थी थे। मैं सालभर साबरमतीमें रहकर वर्धा आश्रम-में पहुँच गया। वर्धा आनेके बादका विनोबाजीका अितिहास अिधरके लोग जानते ही हैं।

भारतके आधुनिक महर्षि– सन्त विनोबा

[लेखकः-- युगलकिशोर सिंह, शास्त्री]

सन्त विनोबा भावे आधुनिक भारतके महर्षि हैं। वे निष्काम, स्थितप्रज्ञ. जीवनमुक्त और गणातीत योगी हैं। उन्होंने अपनी विद्या और तपस्यामे अपनेको इतना अनासक्त बना रखा है कि उन्हें देख कर आर्य कालीन ऋषि-महर्षियोंकी याद आती है। ऐसा प्रतीत होने लगता है कि ऋषि-महर्षियोंकी परंपरा टूटी नहीं है—लगातार जारी है। सन्त विनोबा विज्ञापनसे बहुत दूर रहते आये हैं। उन्हें प्रसिद्धिकी तनिक भी चिन्ता नहीं। वे बराबर लोक प्रसिद्धिसे घबडाते रहे हैं। सेवा उनके जीवनका व्रत हैं और वे इस सेवाको अज्ञात रख कर निष्काम भावसे बराबर करते रहे हैं।

महात्मा गांधीने जिस तरह बहुतसी चीजें दी हैं उसी तरह उन्होंने विनोबा भावे जैसा सन्त भी दिया हैं। विनोबा भावे महात्मा गान्धीके सत्य और अहिंसाके परम उपासक है। गान्धीवादके पूर्ण मर्मज्ञ है। वे प्रकाण्ड विद्वान है। धार्मिक ग्रंथोंका आध्ययन और मनन आपका बहुत गहरा है। आप अनेक भाषाओंके ज्ञाता हैं। वेदों और उपनिषदोंका आपका ज्ञान अतुलनीय है। आपके जीवनके अनुभवने आपके शास्त्रीय-ज्ञानमें चार चांद लगा दिये हैं। आप प्रतिक्षण जनताकी सेवामें निरत रहते हैं। आपका सारा जीवन सत्कार्योंसे ही निर्मित हुआ है। आप अपनी सारी तपस्या, सारा ज्ञान और सारा अनुभव जनता जनार्दनकी अर्चना और आराधनामें खर्च कर रहे है।

सबसे पहले महात्मा गान्धीने सन् १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रहके समय देशके सामने इनको उपस्थित किया। वे सर्व प्रथम आदर्श सत्याग्रही-रूपमे सामने आये। इसके पहिले बहुत कम लोग आपको जानते थे। महात्मा

गान्धी मनुष्यके सच्चे पारखी थे । वे मनुष्यको सही-सही पहचानते थे। आपने संत विनोबाको अच्छी तरह परखा था ।

तभी तो आपने संत विनोबाको प्रथम आदर्श सत्याग्रहीके रूपमें देशके सामने उपस्थित किया था। इन्हें उपस्थित करते हुए महात्मा गान्धीने उस समय जो आपका परिचय दिया था उससे आपके गुणों पर आधा प्रकाश पडता है। आप आजन्म ब्रह्मचारी हैं। हमारे शास्त्रोंमें "मनस्येक, वचस्येकं कर्मक महात्मनाम्" इस रूपमें और महात्माका परिचय दिया गया है। महात्माका यह रूप और गुण आपमें ओतप्रोत है। आपके मन, वचन, और कर्ममें एक रूपता हैं। आपका आदर्श जितना ऊंचा है, चरित्र भी उतना ही ऊंचा और महान् है। १९४० में जबसे महात्मा गांधीने प्रथम सत्याग्रहीके रूपमें आपको देशके सामने उपस्थित किया तबसे आपकी सुगंधी फैलती जा रही है। फिर भी आप अपनेको अज्ञात रखनेका बराबर प्रयत्न करते रहे हैं। पर अब तो महात्मा गांधी नहीं है। अब आप अपनेको अज्ञात नहीं रख सकेंगे। आपको गांधीजीके आदर्शके प्रचार और उनके जीवन कार्यको सफल बनानेके लिये एकांत और अज्ञात जीवनको छोड़कर जनताके सामने आना ही पडेगा। महात्मा गांधी आदर्श समाजको, रामराज्य को, सर्वोदय समाजको, साकार रूप आपसे बढ़ कर दूसरा कौन दे सकेगा सच पूछिये तो आप महात्माजीके निधनके बाद जनता जनार्दनकी खुली सेवाके लिये देशके खुले कार्योंमें आ भी गये हैं। इन दिनों आप वर्धा छोड़कर दिल्ली आगये है और वहाँ शरणार्थियोंकी सेवाका कार्य कर रहे है। उसके पूर्व वर्धामें देशभरके रचनात्मक कार्यकर्ताओंका जो संमेलन हुआ था, उसमें आपने गांधीजीके सर्वोदय समाजकी कल्पनाको चरितार्थ करनेके लिये जो व्यवहारिक मार्ग प्रदर्शन किया वह आपसे बढ़कर कौन कर सकता था। आपने इस दिशामें नेतृत्व प्रदान किया है। मुझे पूरी आशा है, आप जैसे सात्विक संतके नेतृत्वमें भारतमें गांधीजीके सर्वोदय समाजकी कल्पना मूर्तिमान होकर रहेगी।

ऐसे संत और महर्षिके दर्शनके लिये और उनकी अमृतमयी वाणी

सुननेके लिये मैं १९४० से ही ललायित था। इस बीच उनके बहुतसे प्रवचन, सदुपदेश और भाषण 'हरिजन, सर्वोदय' तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओंमें पढ़नेको मिले थे। पर प्रत्यक्ष दर्शन और प्रत्यक्ष प्रवचन सुननेकी लालसा हृदयसे नहीं हटी थी। १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रहके प्रथम आदर्श सत्याग्रहीका दर्शन करने और प्रवचन सुननेकी लालसा दिनो दिन प्रबल होती जा रही थी। इनके दर्शन और प्रवचन सुननेकी लालसा क्यों? इसलिये कि वे आधुनिक भारत ही नहीं, आधुनिक विश्वके एक महर्षि, और महान् संत है। उनकी वाणी और उनके प्रवचनमें हम अपने प्राचीन ऋषियों और संत महात्माओंकी श्रेयस्कर और कल्याणमय वाणी सुननेको मिलती है। उनकी वाणीमें हमें मानव जातिकी मैत्री, शान्ति और सहयोगका सन्देश सुननेको मिलता है।

सुना है 'यादृशी भावना यस्य सिद्धि भर्वति तादृशी' जिसकी भावना जैसी रहती है उस रूपमें वह पूरी भी होती है। बिहारके सौभाग्यसे या यों कहना चाहिये कि मेरे सौभाग्यसे वे १८ अप्रैलसे २१ अप्रैल तक विक्रम [पटना] में होनेवाले अखिल भारतीय आधारभूत शिक्षा सम्मेलनमें पधारे। उसके एक दिन पूर्वही वे विक्रम पहुँच गये थे। उस दिन १७ अप्रैलको पटनाके गान्धी मैदानमें गान्धी-स्मारक-निधिके संबंधमें होनेवाली सार्वजनिक सभामें प्रवचन करनेके लिये जब वे बुलाये गये तब मेरी चिर अभिलाषित आशा पूरी हुई। उनके दर्शन भी हुए और प्रवचन भी सुना। सचमुचमें उस दिन मैंने एक महर्षिका दर्शन किया और ऋषिकी वाणी सुनी। वे बिलकुल गान्धीजीकी वेशभूषामें थे। गान्धीजीकी तरह स्वच्छ खादीकी कोपी धारण किये थे, एक स्वच्छ खादीका टुकड़ा शरीर पर रखे थे। मुख मण्डल पर ऋषि तुल्य शान्तिकी आभा झलक रही थी। उनके प्रवचन क्या थे मानव जातिको श्रेय, शान्ति, मैत्री और सहयोगका दिव्य सन्देश था। उन्होंने कहा कि भारतमें जो इतनी जातियाँ उपजातियाँ हैं, भाषाके इतने भेद हैं, यह अच्छा ही है। यह भेद तो उसी तरह हैं जिस तरह एक ही ईश्वरके अनेक नाम, रूप और गुण हैं। इसके लिये आपसमें लड़ना और भेड़िया

बन जाना मूर्खता है-ईश्वरकी सत्ताको इन्कार करना है। जिस तरह ईश्वरके अनेक नाम, रूप और गुण है उसी तरह उसकी उपासना और इबादतके लिये भी अनेक तरहकी विधी और भाषायें हैं। फिर इसके लिये झगड़ा क्यों ?" ऋषि की इस वाणीमें कितनी उदारता है। मानव जातिकी एकता और कल्याणकी कितनी उदात्त भावना है। उक्त प्रवचनमें क्या हमारे प्राचीन ऋषियोंका 'बन्धन कटुम्बकम' की भावना और छिपी नहीं हैं ? अगर हमारा देश उनके इस सन्देशको हृदयंगम कर लें तो देशका कितना बड़ा कल्याण हो और संसार इस उदाहरणसे कितना प्रभावित हो।

इसके बाद हमें इस आधुनिक ऋषिके दर्शन और श्रवणका सौभाग्य १८ अप्रैलको विक्रमके अखील भारतीय आधारभूत शिक्षा संमेलनमें प्राप्त हुआ। आपके उस दिन तीसरे पहर आधारभूत शिक्षाके संमेलनमें आधारभूत शिक्षाके संबंधमें ओजपूर्ण और साथ ही महत्वपूर्ण प्रवचन हुआ। आधारभूत शिक्षा हमारे देशके लिये नयी चीज हैं। यह भी गांधीजीकी हमारे देशको अमुल्य देन है। अभी कुछ ही वर्षोंसे इस देशमें अत्र तत्र जिस शिक्षाका प्रयोग चल रहा है। बहुतसे लोग यहां तककी शिक्षित कहे-जाने वाले लोग भी नहीं जानते कि यह शिक्षा क्या है और इसका उद्देश्य क्या है। उस दिन जिन्हें संत विनोबाके प्रवचन सुननेका सौभाग्य और सुअवसर मिला वे साफ साफ समझ गये होंगे कि आधारभूत शिक्षा क्या है, और उसका उद्देश क्या है। उन्हें यह भी विश्वास हो गया होगा कि अगर यह शिक्षा देशमें सफल हो जाय तो गांधीजीकी कल्पनाके सर्वोदय समाजकी स्थापना होनेमें देर न लगेगी। सन्त विनोबाने अपने प्रवचनमें कहा- आधारभूत शिक्षाका लक्ष्य मानवताका पूर्ण विकास हैं। अगर देशमें सच्चा स्वराज्य कायम करना है तो हमें समाजमें आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्रान्ति कर एक ऐसे समाजका निर्माण करना है जिसमें हर व्यक्ति हर तरहसे स्वावलम्बी हो। यह काम बौद्धिक क्रांतिके द्वारा ही किया जा सकता है। मानसिक श्रमके साथ शारीरिक श्रम ही शिक्षाका वास्तविक

रूप है। उनके इस प्रवचनको सुनकर वहां उपस्थित सभी बड़े बड़े शिक्षा विशारदों और विद्वानोंने उनकी प्रकाण्ड विद्वत्ता और ऋषित्वको गद्‌गद्‌ कंठसे स्वीकार किया और माना कि इस शिक्षासे सचमुचमें देशका कायाकल्प हो सकता है और देशमें सर्वोदय समाजकी स्थापना हो सकती है। मुझे तो उनके दर्शन और श्रवणसे बड़ी आत्मशांति मिली। उनके प्रवचनसे जी नहीं अघाया उनके प्रवचनको जितना सुना जाता था उतनी ही अधिक सुननेकी प्रबल इच्छा होती जाती थी। उनकी प्रवचन मस्तिष्कको ही नहीं हृदय और आत्माको भी भोजन देने वाला है। इसलिए कोई भी हृदयवान और आत्मवान व्यक्ति उनके प्रवचनसे अघा नहीं सकता। एक बार भी उनक सम्पर्कमें आनेवाला और एक बार भी उनके प्रवचनको सुननेवाला व्यक्ति आत्माको उठाये बिना नहीं रह सकता। सच्चे महात्माका यही गुण है कि वह अपने सम्पर्कसे, अपने स्पर्शसे पारस मणिकी तरह कुधातुको भी सोना बना देता है। साधारण मनुष्य दैवी गुणों और दैवी सम्पदाओं-से विभूषित कर देता है। सन्त मुंहसे कम बोलते हैं, उनका-चारित्र, आचरण उनका उनके मुंहसे कहीं अधिक कह देता है। श्री बिनोबा मितभाषी हैं; पर उनके मुंहकी अपेक्षा उनका आचरण और चरित्र कहीं अधिक बोलता है। वे सच्चे अर्थमें संत है—महात्मा है। वे अपनी वाणीकी अपेक्षा अपने चरित्रसे ही लोगोंको अधिक शिक्षा दे देते हैं।

संत विनोबा एक महाराष्ट्रीय ब्राह्मण हैं। इनके पितामहः और माता पिता बडे ही धार्मिक पुरुष थे। धार्मिक वातावरणमें ही सन्त विनोबाका पालन पोषण हुआ। बचपनका आपका अध्ययन भी धार्मिक और प्राचीन संस्कृतिके वातावरणमें हुआ। धीरे धीरे अपने पितामहः और माता पिताके सारे गुण आपमें उतर आये। इनकी माता बड़ी ही श्रद्धालु थी। बहुत नियम निष्ठासे रहती थी। मराठी संतोंके बहुतसे भजन इन्हें याद थे। इन भजनोंको वे अपने काम करते समय, भोजन पकाते समय बराबर गुनगुनाती रहती थी। वे सात्विक भावनामें ही सदैव भावित रहती थीं। इसका प्रत्यक्ष

असर सन्त विनोबा भावे पर पड़ा। सात्विक चिन्तन आपके जीवनका नियम हो गया। इनकी मां इन्हें धर्मकी बातें भी बतलाया करती थी, जिससे इन्हें बड़ा लाभ हुआ और वे आगे चल कर सच्चे धार्मिक बन सके।

धार्मिक सूत्रों और वचनोंको विनोबाजी बहुत याद करते थे और उसे अपने जीवनमें उतारनेका प्रयत्न करते रहते थे। "नेकी कर और नदीमें डाल" यह आपके जीवनका संचालक सूत्र है।

बचपनसे ही संयम, तत्वचिन्तन; वैराग्य आपका जीवन साथी हो गया है। आपमें न मोह है और संशय है। मोह रहित तो आप इतना हो गये थे कि आपने अपनी दक्षताका सारा प्रमाण-पत्र अग्नि देवको समर्पित कर दिया। "तपस्या, जीवनकी सबसे बड़ी कला है" महात्मा गांधीके इस वचनको आपने अपने जीवनपर स्पष्टतः और पूर्णतः उतार लिया है। आपका जीवन और जीवन-कार्य ही एक बड़ी शिक्षा बन गयी है।

आप स्वावलम्बनके सिद्धांतको मानते हैं। अपने ही हाथसे अपना सब काम करते हैं। अपने ही हाथोंकी बनी खादी पहनते हैं। कताईकी कलामें आप बहुत प्रवीण हैं। इसे आप अहिंसाका प्रतीक मानते है। आप-आठ-आठ घण्टे कातते हैं और इसमें आनन्द अनुभव करते है, चरखेका आपने अपने जीवनका साथी बना लिया है। दरिद्रनारायणकी सेवाका सबसे उत्तम साधन आप इसे मानते हैं। गान्धीके समान ही आप संमयके बड़े पाबन्द है। ठीक समय पर व्यवस्थित रूपसे काम करना आपने अपना जीवन बना लिया है। गरीबोंकी सेवाको आपने अपने जीवनका व्रत बनाया है। आपके जीवनका सारा कार्य गरीबोंकी सेवाके लिये ही होता है। आप दूसरोंको जो कार्य बताते है उसकी उपयोगिताको आप कसोटी पर पहिले कस लेते हैं और पहिले उसे खुद करते हैं। कोई कार्य करके ही वे उसे दूसरोंको करनेके लिये कहते हैं।

महात्मा गान्धीके यशस्वी निजी शास्त्री स्वर्गीय महादेव देसाईने आपके बारेमें एक बार कहा था कि "बापूके बाद आप ही ऐसे व्यक्ति हैं, जिनकी मेधा प्रतिक्षण विकसित होती रहती है।" महात्मा गान्धीके आप प्रतीक हैं। उनका प्रतिनिधित्व आप ही कर सकते हैं। गान्धीजीके बाद आज सारे देशकी दृष्टी आप पर लगी हैं। मुझे आशा है कि आपके सात्विक नेतृत्वमें हम गान्धीजीके समाजकी स्थापना कर सकेंगे और इसके द्वारा संसारमें एक नया उदाहरण रख सकेंगे।

विनोबाका विचार-विलास

[लेखक:— साने गुरुजी]

जयप्रकाश और विनोबाजी

अेक समय बाबू जयप्रकाश नारायण विनोबाजीके पास आये थे। दोनों-की खूब बातचीत हुअी। समाजवाद पर भी चर्चा हुअी। विनोबाने कहा "तुम्हारे तत्वज्ञानको अीश्वर नहीं होगा; परन्तु मेरे हैं। लेकिन अिस अीश्वर को कुछ देरके लिये हम बाजू रख देते हैं। अीश्वरके नीचेकी कोअी दूसरी चीज मैं मानता हूँ तो, वह बुद्धि है। मेरी बुद्धिको पटा दीजये। मैं आपको अेक सवाल पूछता हूँ "मनुष्यमें हिंसाकी प्रवृत्ति अधिक है या अहिंसाकी? मनुष्यका संपूर्ण जीवन देखिये और बताअिये।"

"मनुष्यको अहिंसक ही कहना पडेगा। उसमें अहिंसाकी ही वृत्ति अधिक है अैसा कहना पड़ेगा।" जयप्रकाशने कहा।

यह समाजवाद क्यों?

अेक दिन यूं ही बातचीत चल रही थी, किसीने पूछा "स्वतंत्रता मिलनेके पहले ही यह समाजवादी विचार क्यों? बेकार बुद्धिका मतभेद क्यों बढ़ाना चाहिये?"

विनोबाने कहा "स्वतंत्रता आज नहीं तो कल आनेवाली ही है। जरा अधिक त्याग करनेकी आवश्यकता है। परन्तु स्वतंत्रता याने क्या? स्वतंत्रता याने हमें जो करना है, उसे करनेकी शक्ति। कल स्वराज्य मिला तो किस तरहकी समाज रचना की जाय, नया हिन्दुस्तान कैसा बनाया जाय क्या अिसकी कल्पना नहीं चाहिये? कल अधिकसे अधिक लोगोंको

निर्माण करें कि चरखेको अधिकसे अधिक फैलायें ? ग्रामोद्योग वालोंने अपनी अपनी योजना सुझाते रहना चाहिये। यंत्रवालोंनेभी अपनी योजनायें रखना चाहिये। कल बहुमत जो पसंद करेगा उसीके अनुसार किया जायगा लोगोंके सामने यह सारे विचार आना ही चाहिये। अंग्रजोंसे लढते समय यह बात बीचमें आडे न आए अितना सिर्फ देखना चाहिये।"

हिंदू–मुस्लिम–अैक्य

विनोबाका हिंदू-धर्मपर प्रेम है । परन्तु सभी धर्मोंके प्रति उन्हें आदर है। उन्होंने सभी धर्मोंका गहरा अध्ययन किया है। मुसलमान धर्मका भी किया है। मूल अरबी भाषामें कुरान पढा है। उसमेंसे कअी सूरे कंटस्थ कर-लिये है। अेक समय गान्धीजीने विनोबाको मौलाना अबुलकलाम आंजादके सामने कुरान पढनेके लिये कहा और विनोबाने वह पवित्र अरबी कुरान कंठस्थ (मुखपाठ) कहकर बता दिया। अरबी भाषा सुननेमें बहुतही रोचक है। मौलाना खुश हो गये। विनोबाका अेक भी उच्चार गलत नहीं हुआ था।

विनोबा हिंदू-मुस्लिम अेकताकी मूर्ति है। महम्मद पैगंबरकी किसीने निन्दा की अथवा उनके बारेमें बुरे प्रश्न पूछे गये तो वे क्षुब्ध हो जाते हैं। अेक समय धुलिया जेलमें किसीने प्रश्न किया "पैगंबरने कअी शादियाँ की है।" विनोबाका चेहरा लाल हो गया; परन्तु फिर शान्त होकर पैगंबर-की श्रेष्ठताको बताने लगे। उन्होंने कहा "पैगंबरका जीवन आखोंके सामने आते ही मानों मेरी समाधीं लग जाती है। कार्लाअिल, गीबन समान महान् अंग्रेजी पन्डीतोंने भी महम्मद पैगंबरकी स्तुति की है। क्या उन्हें किसीने रिश्वत दी थी ? पैगंबरने अनेक शादियाँ की हैं; परन्तु वे सब भोगके लिये नहीं। भिन्न भिन्न लडाकू जातियोंमें अेकता स्थापित करनेके लिये कुछ शादियाँ थी। कुछ शादियाँ धर्मके नामपर बलिदान हुये शहीदोंके अनाथ पत्नियोंसे थी। उनसे शादियाँ करके ही वे उन अनाथ स्त्रियोंके रक्षण-पोषणकी व्यवस्था कर सकते थे। महम्मद यदि भोग-विलासका कीडा रहता तो आज तेरासो वर्षतक करोडों लोगोंके हृदयमें कैसा रहता ?

"मुसलमान होनेसे क्या वह बुरा होगया ! अीश्वरने यदि मुसल्मानों-को बुराही पैदा किया होता तो उस अीश्वरकी अेक कौड़ी ही कीमत है अैसा मानना चाहिये। मुसलमानोंमें जाते नहीं हो, घुल मिलकर रहते नहीं हो, उनसे मित्रता स्थापित नहीं करते, अलग रहते हो, उन्हें अधिक तर अस्पृश्य मानते हो; यह कुछ अच्छा नहीं है। मुसल्मान भी अच्छे है। पिछले महायुद्धमें युद्ध कैदियोंके साथ अच्छी तरह बर्ताव यदी किसीने किया हो, तो वह है तुर्किस्तान, अिस तरहका प्रशंसा-पत्र संपूर्ण यूरोपने दिया है।"

अेकने प्रश्न किया "क्या उनके कुरानमें यह लिखा नहीं है, कि स्वर्गमें सुंदर अप्सरायें मिलेंगी, अमृत मिलेगा ?"

विनोबाने कहा—"क्या तुम्हारा भी स्वर्ग अैसा नहीं है? वहाँ अप्सरायें और अमृत तुमने भी रखा है। मामूली आदमीके लिये यह स्वर्ग-नरक रहता है। सुखकी लालसा या शिक्षाका डर बताकर उन्हें नीति मार्गपर रखने पड़ता है; परन्तु अिस प्रकारका वर्णन धर्मका सार नहीं हैं।"

अेकने प्रश्न किया "शत्रु कहा कि कत्ल करना अैसा क्या यह कुरा-नमें लिखा नहीं है !"

विनोबाने कहा "कुरानमें जो अैसे वाक्य है, वह दुभाग धोका देकर फसानेवाले ज्यू लोगोंको उद्देश्यकर लिखे गये हैं। ज्यू, महम्मदके शत्रु, मक्कासे मदीनेपर चढ़कर आये थे उस समय मदीनेमेंके ज्यू लोगोंने अंदरूनी शत्रूसे मिलकर षड़यंत्र रचा। अैसे समय क्या किया जाय ! आजके राष्ट्र क्या करेंगे ! महम्मद सिर्फ धर्मसंस्थापक नहीं थे; उन्हें तो राष्ट्रका भी कारभार चलाना पड़ता था। उन्होंने अपने खाजगी जीवनमें क्षमा ही की है। कुरानके कुछ वाक्योंका अर्थ तत्कालीन परिस्थितिके लिये हैं। क्या हम यह नहीं कहते कि हमारे शत्रुओंका नाश होना चाहिये ! क्या अपने वेदोंमें भी अिस अर्थका मंत्र लिखा नहीं हैं कि, "जो हमारा द्वेष करेगा और हम जिसका द्वेष करेंगे, हे प्रभो ! उसका खात्मा कर"। परन्तु यह धर्मका प्राण नहीं है।

ग्रामोंमेंसे प्रचार

सन् १९३२ में धुलिया जेलमें रहते समय अेक दिन चर्चा चल रही थी कि खानदेशमें काम किस तरहसे किया जाय। श्री अण्णासाहेब दास्तानेजीने कहा "कागज पर अच्छी तरहसे योजना तैयार करेंगे।

विनोबाजीने कहा "कागज पर वह योजना नहीं चाहिये। कागजकी योजना कागजपर ही रहेगी। कागजी योजनासे मुझे डर लगता है। योजना आदि नहीं चाहिये। काम करने लग जाअिये। उसमेंसे आपोआप कामकी योजनाका निर्माण होगा। तहसिलमें दस तो भी कार्यकर्ता चाहिये। प्रत्येक के पास २५-३० गांव होना चाहिये। महिनेमेंसे अेक बार तो भी प्रचार-कोंकी मुलाकात होनी चाहिये। उन गांवोंके बजट प्रचारकने तैयार करना चाहिये। गांवकी लोक-संख्या कितनी है, उद्योग-धन्दे क्या है, बाहरसे कौनसा माल आता है, खेतकी लगान कितनी है, कर्ज कितना है, स्कूल है या नहीं, कुअे है या नहीं, पार्टीबाजी गांवमें है या नहीं, गुन्डोंसे लोगोंको तकलीफ कहाँ तक है, जात-पातमें अेकता है या नहीं, हरिजनोंकी स्थिति कैसी क्या है — आदि जानकारी चाहिये। प्रचारकने पार्टीबाजीसे अलग रहना चाहिये। गांववालोंसे मेल-मिलापसे रहना चाहिये। अेक आदमीको तो भी आज सूत कातना सिखलाउँगा, अेकको तो भी दो अक्षर सिखाउँगा, अेक तो भी गायका दूध पीनेवाला बनाउँगा, अेक तो भी खद्दर-धारी बनाउँगा, अिस तरह का रोज संकल्प करना चाहिये।

जिस गांवोंको अपने तरफ लिया होगा, उन गांवोंमें हररोज जाते रहना चाहिये। जिससे पहचान हुअी उससे और बढ़ाना चाहिये। उन्हें नये विचार बताना चाहिये; प्रेम बढ़ाना चाहिये, अपनी मित्रताकी परिधि बढ़ाते रहना चाहिये।

गान्धी जीवन विषयक तत्वज्ञान के अेकमात्र भाष्यकार

विनोबा भावे

[लेखकः— प्रभाकर दिवाण]

सन् १९४० में गान्धीजीने व्यक्तिगत सत्याग्रहके प्रथम सत्याग्रहीके नाते चुननेके बाद अज्ञात विनोबाका नाम हिन्दुस्तानमें ही नहीं बल्कि अिंग्लैंडके पार्लियामेंटमें भी मशहूर हो गया। गान्धीजीने दूसरे और बड़े बड़े नेताओंको छोड प्रथम सत्याग्रही के नाते, जिसका चुनाव किया, वह विनोबा कौन है, यह जाननेकी लालसा लोगोंको उत्पन्न होने लगी।

विनोबाका सारा व्यक्तित्व, उनका तेजस्वी ब्रम्हचर्य, उनकी प्रखर बुद्धिमत्ता, उनकी असाधारण साहित्य शक्ति, उनका असाधारण वक्तृत्व सब कुछ अैसा है कि कोअी भी मनुष्य प्रभावित हुये बिना नहीं रहेगा।

गान्धीजीके जीवन-विषयक तत्वज्ञानका गहरा अभ्यास कर, उसे आत्मसात कर, जिसने अपने खुदके जीवनमें उतारा है, अैसे गान्धीजीके अनुयायियोंमें, विनोबाजी ही अेक है, अैसा कहना पडेगा। बुद्धिकी कसौटी पर नापे सिवा, गणितके सूक्ष्म तराजू पर तोले सिवा कोअी भी बात विनोबाजी स्वीकार नहीं करते। वे अत्यन्त कठोर तर्कशील है अैसा भी कह सकते है। परन्तु अेक बार बुद्धिकी कसौटी पर और तर्ककी अग्निमें तपकर जो तत्व मालूम होगा, उसे उसी क्षण अपने जीवनमें अमलमें लाकर बादमें अपनी श्रद्धासे सराबोर होकर उसके उपासक मालूम होंगे। अपने तत्वज्ञानको बुद्धि और श्रद्धाके मेलमें जोड बताकर, उसे अपने जीवमें अमल करनेवालोंमें गांधीजी अपनेसे अधिक विनोबाजीको मानते थे। कोअी भी महत्वपूर्ण निर्णय लेना

हुआ अथवा कोओी भी महत्वके काममें बढ़ना हुआ तो गान्धीजी विनोबासे सलाह-मशविरा लिये बगैर रहते नहीं थे।

नव्हेंबर १९४५ में हुअी चरखा संघकी विश्वत मंडलकी बैठकमें विनोबाजीको खास बुलाया गया था। एक महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा चल रही थी। सभीने अपनी अपनी राय प्रकट की। अंतमें गांधीजीने विनोबाजी-की ओर घूम कर उनसे राय पूछी। विनोबाजीने अपना जो मत जाहीर किया, वह अितना अनपेक्षित और क्रांतिकारक था कि औरोंकी बुद्धिको उससे जरा धक्का ही लगा और गांधीजीको भी सोच विचारमें डाल दिया। उनकी राय सुनकर गांधीजी स्तब्ध हो गये। सभामें शांतता हो गअी। कुछ देर तक अेक दूसरेके मुँहको देखते हुये स्तब्ध रहनेके बाद कुछ अपनेसे और कुछ दूसरोंको उद्देश्य कर गान्धीजी कहने लगे, "विनोबा जो कुछ कहते है वह दलीलके परे होता है।" और उन्होंने विनोबाजीकी रायको अन्तिम राय समझकर मजूर किया। अितना गान्धीजीका विनोबाजीपर विश्वास है।

सन् १९२१ में विनोबा वर्धामें आये, तबसे वर्धा ही उनका कार्यक्षेत्र हो गया है। आज ग्राम सेवा मंडलका कार्य तो उन्हीकी देखरेखमें चल रहा है। परंतु अिसके अतिरिक्त सेवाग्राम आश्रम, तालीमी संघ, चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ, गो सेवा संघ, महिला आश्रम आदि संस्थाओंके संचा-लनमें उनका प्रत्यक्ष संबंध है। परंतु यह ध्यान रहे कि अिस सभी संस्था-ओंमें उनकी भूमिका सलागार अथवा मार्गदर्शकके रूपमें है। भिन्न भिन्न संस्था-अ खोलकर उसे चलानेकी उनकी बिलकुल अिच्छा नहीं है। १९४४ में जेलसे बाहर आनेपर उन्होंने यह भी कहा है कि "बडी बडी संस्थायें खड़ी करना और उसे चलाना अहिंसाके अनुकूल नहीं है। अपने अकेलेसे जित-ना हुआ उतना प्रत्येकने करना चाहिये। संस्था खड़ी कर बड़े पैमानेमें चलानेकी हौस नहीं रखना चाहिये।"

अेक समय अेक कार्यकर्ता उनके पास आये और अमुक अेक रचना-

त्मक कार्य करनेकी उत्कट अभिलाषा है और कार्यके लिये अेक संस्था निकालनेका प्रयत्न कर रहा हूँ यह कहकर विनोबाजीसे उसने राय मांगी। विनोबाने कहा- "बाबारे, आपको अनासक्त बुद्धिसे सच्ची सेवा करना हो तो, संस्था खड़ी करनेके प्रयत्नमें मत पड़िये। खुदसे जितना बन सके उतना सेवाका काम बड़प्पनकी अिच्छा न रखते हुये करते रहिये और अिसीमें लोगोंकी सच्ची सेवा होनेवाली है।"

बड़ी बड़ी संस्थायें निकालकर उसे चलानेके उद्देश्यके पीछे खुदको बड़प्पन मिले अैसी गुप्त कहो अथवा प्रकट रूपसे कहो भावना बनी रहती है। और अिस भावनासे खुदका बडप्पन बढ़ानेका दोष पैदा होना संभव है। और एसा हुआ तो ढोंग, अविश्वास और अनाचारको बढ़नेकी संधी मिलती है। यह सब दोष निकालना है तो निष्काम सेवा-भावसे कार्य करनेवाले मनुष्यने अपने अकेलेमें जितना होगा उतना ही सेवा करनेका ध्येय सामने रखना अधिक श्रेष्ठ है। और नहीं तो संस्था जैसी जगहपर अधिकारी और नोकर जैसोंका संबंध और अन्य बंधन-नियम आदि आनेके कारण कअी प्रकारके उलझनोंका प्रश्न पैदा होता है जिससे सेवा कार्यमें बाधा होती है और नुकसान पहुँचनेकी संभावना रहती है। जिसे आत्मिक उन्नतिका एक साधन, अिस रूपमें सेवाकार्य करना हो तो उसने संस्था और संघटनके फेरमें नहीं पडना चाहिये ऐसा विनोबाके कहनेका उपरोक्त सार है। और अैसा रहा तो ही अिस कामको संघटित रूप देनेकी दृष्टिसे यह संस्थायें उपयोगी है। और अिसीलिये विनोबाने उपर बताअी हुअी सभी संस्थाओंमें अपना कार्य-भाग रखा है।

वर्धा आनेपर पहले दस वर्ष खासकर वर्धा आश्रम चलानेमें व्यतीत किये हैं। आश्रममें खादी काम संबंधित प्रयोग और सुधार करना अिसपर उनका विशेष जोर था। आज भी खादी काममें वह अधिक ध्यान देते हैं। खादीके पीछेकी विचार-परंपरा लोगोंको समझा देना और खादीके काममेंका कातना, पींजना, बुनना, आदि क्रियाओंका सूक्ष्म अध्ययन और प्रयोग

विनोबा करते आये हैं। बुद्धिवादी लोगोंमें खादीके तत्वोंको पटानेमें लेखनसे, भाषणसे और बातचीतसे जितना काम किया है, उतना (गांधीजीको छोड़कर) अन्य किसी दूसरेने नहीं किया।

विनोबाजीका दूसरा महत्वका काम शिक्षाके बारेमें है। आश्रममें रहने वाले बच्चोंको अपने पद्धति-नुसार शिक्षा देनेका कार्य करते आये है। बच्चोंको शिक्षा देनेके बारेमें उनका मत है कि किताबी शिक्षा न होते हुये शरीर-परिश्रम और हस्त व्यवसायपर उसकी बुनियाद होना चाहिये। बच्चोंको अपने रोज मेर्रा-जीवनसे शिक्षा दे सके तो ही वह सच्चा शिक्षण है। जीवनसे अलग, अैसे स्कूली जीवनकी कृत्रिम शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के विकासकी दृष्टिसे हितकर नहीं है, यह विनोबाजीकी घोषणा आज सभीको पटगअी है। आश्रममें अिसी पद्धतिसे उनके पाससे शिक्षा लेकर तैय्यार हुये शिष्य आज बुद्धिके और कार्यके क्षेत्रमें जिम्मेवारीका काम कर रहे हैं। "विनोबाके पास निर्भय, तेजस्वी और कर्तव्यशील अनुयाअियोंकी मजबूत सेना है वैसी मेरेपास भी नहीं है" यह वाक्य गांधीजीने अपने पास लिखकर रखे थे। विनोबाके शिक्षणके कल्पनासे ही 'वर्धा शिक्षण योजना' का श्रीगणेश हुआ है। आज वर्धा शिक्षण योजनाके मार्ग दर्शक विनोबा ही है।

भाषा-शास्त्रमें तो उनका ज्ञान अपूर्व है। उन्हें आज सतरा-अठरा भाषायें मालूम है। वेद, उपनिषद, गीता, ब्रम्हसूत्र और संस्कृतके अन्य आध्यात्मिक साहित्यके तो प्रकांड पन्डित है। अिसके अतिरिक्त हिन्दी, बंगाली, गुजराती, उडिया वगैरे संस्कृत परिवारमेंकी भाषायें; तेलगू, कानडी, और मलयालम्, यह द्रविड भाषायें, उर्दू, फारसी और अरबी यह मुस्लिम भाषायें; और अंग्रेजी, फ्रेन्च, लॅटिन यह यूरोपीय भाषायें उन्हें अच्छी तरह मालूम है। उनकी स्मरण-शक्ति अद्‌भूत होनेके कारण किसी भी भाषाको ग्रहण करनेमें अधिक समय नहीं लगता। "अधिकाधिक मेरी स्मरण-शक्ति बढ़ रही है" अैसा वे कहते हैं। द्राविड भाषाका अध्ययन तो

उन्होंने सन् १९४२ में वेलोरके जेलमें रहते ससय किया है। अमुक समय अमुक भाषाका अध्ययन करना चाहिये, अैसा उनका समय पत्रक बना हुआ रहता है। अिसलिये उनके पास जानेपर यह मालूम होगा कि वे कोअी अपरिचित भाषाकी पुस्तकको जोरसे पढ़ते दिखाअी देंगे या मिलनेके लिये आये हुअे भिन्न प्रान्तके लोगोंके साथ उन्हींकी भाषामें बातचीत करते हुअे दिखाअी देंगे। आज उनकी उम्र बावन सालकी है, परन्तु नित नअी भाषा और कला सीखनेका उनका उत्साह अपूर्व है। अिन सब भाषाओंको सीखनेका उनका उद्देश्य उनभाषाओंके धार्मिक और आध्यात्मिक ग्रंन्थोंका परिचय प्राप्त करना और वह भाषा बोलनेवालोंसे आत्मियता प्रस्थापित करना है।

धर्म और तत्त्वज्ञान यह विनोबाके जीवनका मानो पाया है। हिन्दू-धर्मके अनुसार बौद्ध, जैन, सीख, फारसी, मुसलमान, क्रिश्चियन वगैरे प्रमुख धर्मोंका अध्ययन और चिन्तन हमेशा चालू रहता है। वेदके समान कुरान और बायबलका भी गहरा अध्ययन उन्होंने किया है। और अिसी कारण अिन धर्म ग्रंन्थोंका और मराठी सन्त-साहित्यका मनोहारी आविश्कार विनोबाके वाद-विवादमें, व्याख्यानमें और साहित्यमें देखने मिलता है।

आहार-शास्त्र, आरोग्य-शास्त्र, ग्राम-सेवा, अस्पृश्यता निवारण वगैरे रचनात्मक कार्य और उनके बारेमें विचार विमर्ष विनोबा करते रहते हैं। पक्ष-विपक्ष और चुनावके राजकारणसे अलिप्त होते हुये भी कॉंग्रेसके राजकारणमें अथवा कॉंग्रेसके चलाये हुये स्वातंत्र युद्धमें उन्होंने समय समयपर हिस्सा लिया है। १९२२ में नागपुर झंडा सत्याग्रहके समय पहली जेल-यात्रा करनी पड़ी। उसके बाद १९३२ में उन्हें फिर जेल जाना पडा। १९४० के बाद तो जेल-यात्राकी परंपरा निर्माण हो गअी। १९४०-४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रहके समय वे तीन बार जेल गये। और आगे १९४२ से ४४ तक वे जेलमें ही रहे। जेलमें आध्यात्मिक चिन्तनके लिये अधिक समय मिलनेके कारण जेलसे प्रेम होगया होगा यह कहना कोअी आश्चर्य

की बात नहीं है। जेलमें प्रान्तके मुख्य कार्यकर्ताओंको विनोबाजीके सहवासका अधिक समय तक अवसर मिला जिससे सभीको गान्धीजीके जीवन विषयक तत्वज्ञानके निष्ठावान अनुयायी बनानेका कार्य विनोबाजी अनायास कर सके। अब वे सभी लोग विनोबाजीके अनुयायी बन गये हैं। अिस प्रकार जेलयात्रा विनोबाकी आध्यात्मिक और राजकीय शक्ति बढाने में सहाय्य हुआी हैं।

अिसमें कोआी आश्चर्य नहीं कि जनतापर और नेताओंपर प्रभाव पड़नेके कारण विदेशी सरकारकी विनोबापर खास नजर रही होगी। और अिसी कारण १९४२ में उन्हें नाहक जेलमें बंद किया गया। सरकारने विनोबाका जेल जीवन चालू ही रखा। मध्यप्रांत सरकारको विनोबा और विनोबाका आश्रम, गांधीजी और सेवाग्राम-आश्रमसे भी मानो अधिक भयंकर मालूम होता था। और अिसी कारण १९४२ में वर्धा और सेवाग्रामकी किसी भी संस्थाको सरकारने हाथ नहीं लगाया और विनोबा की संस्थाको ही जप्त करके रखा था। विनोबा और उनका आश्रम ही वर्धाके राजकीय हलचलका केंद्र होनेके कारण सरकारकी वक्रदृष्टि (टेढी निगाह) सबसे पहले उन्हींके तरफ जाती थी।

यह सब काम विनोबा करते हैं फिर भी उनका मुख्य काम सलाह देनेका है। वे महान् विचार-प्रवर्तक और द्रष्टा हैं। यदि स्व. महादेव भाआी देसाईको गांधीजीके चित्रकार कहें तो विनोबाजीको गांधीजीके भाष्यकार कहना होगा। विनोबाको गांधीजीके प्रतिनिधि माने तो भी विनोबाके विचार उनके खुदके विचार हैं।

प्राचीन भारतके स्वयम् प्रज्ञ शंकराचार्य और भक्त ज्ञानेश्वर विनोबाके प्रिय और श्रद्धा स्पद ग्रंथकार हैं। 'ब्रम्हसूत्र-शांकरभाष्य' और 'ज्ञानेश्वरी' इन ग्रंथोंका विनोबाने गहरा अध्ययन किया है और उनके विचारोंपर तथा लेखन शैलीपर अिन दो ग्रंथोंकी छाप गिरी है।

विनोबा स्वतः साहित्यकार होनेके कारण उनके सभी साहित्य कलाकी दृष्टिसे अत्यंत उच्च कोटिके हैं। बोलने और लिखनेकी अपेक्षा करनेपर विनो-

यह सब काम विनोबा करते हैं फिर भी उनका मुख्य काम सलाह देनेका है। वे महान् विचार-प्रवर्तक और द्रष्टा है। यदि स्व. महादेवभाअी देसाअीको गान्धीजीके चित्रकार कहें तो विनोबाजीको गान्धीजीके (भाष्यकार) कहना होगा। विनोबाको गान्धीजीके प्रतिनिधि माने तो भी विनोबाके विचार उनके खुदके विचार हैं।

प्राचीन भारतके स्वयम्प्रज्ञ शंकराचार्य और भक्त ज्ञानेश्वर विनोबाके प्रिय और श्रद्धास्पद ग्रन्थकार हैं। 'ब्रम्हसूत्र, शांकरभाष्य' और 'ज्ञानेश्वरी' अिन ग्रन्थोंका विनोबाने गहरा अध्ययन किया है और उनके विचारोंपर तथा लेखन शैलीपर अिन दो ग्रन्थोंकी छाप गिरी है।

विनोबा स्वतः साहित्यकार होनेके कारण उनके सभी साहित्य कलाकी दृष्टिसे अत्यंत उच्च-कोटिके है। बोलने और लिखनेकी अपेक्षा करनेपर विनोबाका अधिक विश्वास है और अिसी कारण आवश्यकता महसूस होनेपर ही वे बोलते है और जहाँ बोलनेकी जरूरत नहीं रहती वहाँ कलमको उपयोगमें लाते हैं। अिसलिये उनके हाथसे जो साहित्य निर्माण हुआ है वह बिलकुल मापा-तुला है। परन्तु लिखने और बोलने जैसा कोअी महत्वका होगा तो ही साहित्यका निर्माण करने के कारण उनका सभी साहित्य मानो उनके व्यक्तित्वके महासागरमेंसे मंथनकर नया ही निकला है।

धुलिया के जेलमें सन १९३२ में विनोबाने गीतापर जो प्रवचन दिया है, वह 'गीताप्रवचन' अिस नामसे सस्ता साहित्य मंडल देहलीसे प्रकाशित हुअी हैं। विनोबाके सभी ग्रंथोंमें यह ग्रंथ सर्वश्रेष्ठ है अैसा कहना पड़ेगा। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि विचारोंकी रमणीयता और विषय निवेदनके अखंड और मधुर प्रवाहके कारण ज्ञानेश्वरी के बाद गीतापर मराठीमें और कोअी ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ।

'गीताप्रवचन' में ज्ञानेश्वरीके समान विनोबाने तत्वज्ञानको काव्य-रूप दिया है, अैसा पाठकोंके मनमें भ्रम पैदा होता है। गीतापरका दूसरा ग्रंथ 'गीताअी' है। यह गीताका समश्लोकी मराठी अनुवाद है। परन्तु गीताअी

को भाषांतर कहनेकी अपेक्षा वह मूल-गीता ही है अैसा कहना पडेगा। वह अितनी सरस है कि गांधीजीने अपनी संस्कृत गीता बंद कर रोजकी प्रार्थनामें गीताअी का पाठ शुरू किया और अिसी कारण आज गीताअी की खपत देड लाखसे भी उपर होगई है। अिसके अतिरिक्त स्वराज्य शास्त्र विचार पोथी और अीशावास्योपनिषद्; ज्ञानदेव, नामदेव और अेकनाथकी भजनें आदि विनोबाकी मराठी पुस्तकें प्रकाशित हुअी है। शास्त्रीय विषय सूत्रबद्ध भाषामें रखनेका विनोबाके शक्तिका परिचय 'स्वराज्य-शास्त्र' परसे मिलता है, तो 'विचार पोथी' में के स्फूट वचनों परसे उनके आध्यात्मिक चिंतन के दर्शन होते हैं। विनोबाके सभी पुस्तकोंका हिंदी और गुजरातीमें अनुवाद होतें हुये भी अंग्रेजी, कानडी वगैरे भाषामें भी कुछ पुस्तकोंका अनुवाद हुआ है।

विनोबाकी वक्तृत्वशक्ति असाधारण है। विचार-प्रवर्तन के कार्य उनके लिखानकी अपेक्षा भाषणके जरिये ही विशेषतः होती है। विनोबाजी अपने भाषणसे जन समुदायको चार-चार घंटे तक डुला सकते है। श्री जमनलालजी बजाजने लक्ष्मीनारायणका मंदिर हरिजन के लिये खुला किया, तबका भाषण आज भी मेरे सामने खड़ा है।

पू० विनोबाजीका शरीर दुबला-पतला है और उँचाअी अधिकसे अधिक साडे पांच फूट होगी। हमेशा अंतर्मुख, शांत और विचारोंमें मग्न रहनेवाला चेहरा देखनेसे यह मालूम होता है कि अिस सामान्य शरीरमें महान आत्मा विराजमान है। रोज तीन-चार मील फिरनेका वे अभ्यास करतें है। पैदल चलनेवालेका आरोग्य और उम्र बढती है अैसा वे हमेशा कहते है। वर्धा या सेवाग्रामसे सायकलपर अथवा अन्य किसी वाहनसे कोअी उनके पास मिलनेके लिये गया तो वे उनको अकसर मुलाकात नहीं देते। यदि पैदल चलकर उनके पास मिलनेके लिये गये तो अन्य दूसरे कामोंको छोडकर वे मुलाक़ात करेंगे। वर्धा, सेवाग्राम अथवा पांच छे मील की दूरीपर जाना हो तो वे खुद हमेशा पैदल जाते है। अिसलिये उनकी

प्रकृति निरोग रहती है। उनकी आँखे सिर्फ (अत्यधिक पढ़नेके कारण) कमजोर हो गअी है। उन्हें ७-८ नंबरका चश्मा लगाने पडता हैं। वह अपना भोजन तौलकर लेते है। निश्चित मात्रासे अधिक कभी भी नहीं लेंगे। उनके भोजनमें दूध, भाजी, फल और थोडी चपाती अितना ही सिर्फ रहता है। सुबह चार बजे उठना, थंड पानीसे स्नान, सुबह-शाम की प्रार्थना और फिरना, रोज नियम-पूर्वक कातना और लिखना, पढ़ना भाषण मुलाकात और चिंतन यह उनकी साधारण दीन-चर्या है।

विनोबाका व्यक्तित्व सर्वांग पूर्ण है। उनके व्यक्तित्वकी जितनी अधिक गहराई है, उतनी अधिक उंचाई भी है। अिस कारण अिस छोटेसे लेखमें उनकी यथार्थ कल्पना देना संभव नहीं। विनोबा एक महान् तपस्वी है, ब्रह्मवेत्ता है, तत्वज्ञानी है, । साहित्यिक है, कवि है, ज्ञानीभक्त और कर्मवीर है, उन्हें प्रणाम कर अिस लेखको मैं समाप्त करता हूँ।

पूज्य विनोबाजी भावे

[लेखकः– प्रो. ठाकुरदासजी बंग]

यद्यपि मैंने विनोबाजीका नाम कई वर्षों पूर्व सुना था, तो भी उनसे प्रत्यक्ष मिलनेका सौभाग्य अप्रेल १९४२ में ही हो सका। वर्धा तहसीलमें प्रौढ-शिक्षा फैलानेकी योजना लेकर मैं उनके पास गया था। वर्धामें रहकर प्रौढ शिक्षाका काम देहातोंमें करनेवाले लिखे पढ़े व्यक्तियोंकी मैं अड़चने दूर करूं और उनका मार्गदर्शन करूं ऐसी यह योजना थी। अन्य कोअी विद्वान होता तो योजनाके गुण-दोषोंपर चर्चा करता। लेकिन विनोबाजी तपाकसे बोल उठे "यह तो ऊपर बैठकर बकरियाँ हांकने जैसा हुआ"। पू. विनोबाजीके ये शब्द मैं आजतक नहीं भूला हूं। उन्होंने योजनाके मर्म-पर ही आघात किया। वे कितने वास्तववादी हैं और किसीभी चीजके

अन्तस्तल तक कितने जल्द पहुंच जाते हैं, यह इस छोटीसी घटनापरसे साफ रूपसे सिद्ध होता है।

इसके बाद तो मैं कई बार विनोबाजीसे मिला। जीवनकी गुत्थियाँ सुलझानेकी बात हो या ग्राम-सेवाकी अडचने हो, कोई भी कभी भी विनोबाजीके पास जाकर अपने हृदयको खाली कर सकता है। और हर समय विनोबाजीसे मिलते हैं निष्पक्ष विचार। हर समस्याका बढिया से बढिया हल विनोबाजीसे आपको मिलेगा। आपके शंकित मनके संशय दूर हो जावेंगे और सन्तप्त हृदयको उनके वचनोंसे शीतल शान्ति मिलेगी।

विनोबाजीका जन्म मध्यम वर्गके एक कुटुंबमें हुआ है। शिक्षाकालकी घटनाओंसे साफ पता चलता है कि भविष्यमें यह कुमार बहुत बड़ा व्यक्ति होनेवाला है। उन्होंने ही एकबार अपने मुहसे कहा था, "मैंने अपने शिक्षा कालमें एक मिनिट भी फिजूल नहीं खोया। जितनी पूंजी मैंने उस काममें प्राप्त की उतनी बहुत कम व्यक्तियोंने की है। मोरोपंतकी सालभरके लिए ४०० आर्याएँ मराठी विषयके पाठ्यक्रममें रखी गई थी और मैं हर-रोज २०० आर्याएँ पढ़ लेता था"। गणित विषयसे आपको अत्यंत प्रेम था। साथ साथ संस्कृतका अध्ययन जारी था और प्राचीन साधुसंतोंके भजनोंका भी अध्ययन हो रहा था। शिक्षाक्रम इंटरतक ही कर पाए होंगे कि शिक्षासे वे ऊब गए और उसको छोड़ दिया। बादमें आप साबरमतीके गांधीजीके आश्रममें रहे। जमनलालजी ऐसे रत्नके लाभसे भला वंचित कैसे रहते? साबरमतीके सत्याग्रहाश्रमकी एक शाखा वर्धामें खोलना तय हुआ और उसके लिए उन्होंने गांधीजीसे विनोबाजीको मांग लिया। उस समयसे इस वर्ष तक विनोबाजी बराबर कारागृहका समय छोड़कर मध्यप्रांतमें वर्धाके नजदीक ही रहते आए है। गांधीजीकी मृत्युके बाद ही वर्धा छोडकर वे दिल्ली गए हैं।

और वर्धाके नजदीक नालवाडीमें हो या गोपूरीमें हो या पवनारमें हो, वे चुपचाप नहीं बैठे है। अखण्ड और अनवरत कर्मयोग यही उनके जीवन

की मुख्य बात है। जिन्दगीभर उन्होंने केवल एक ही काम किया है और आगे भी यही करेंगे और वह है — दरिद्रीनारायणकी सर्वतोमुखी सेवा। यह सेवा उन्होंने एक भावुक व्यक्ति सरीखी ही केवल नहीं की, लेकिन संस्थाएँ स्थापकर गरीबोंको अपने ही पैरोंपर कैसे खडा किया जाय इसके लिये आपने ठोस काम किया। वर्धाके इर्दगिर्द रहकर विनोबाजीने अपने साथ दर्जनों कार्यकर्ता तैयार किए।

और ये कार्यकर्ता भी केवल एकही काम नहीं कर रहे है। विनोबाजी-की ग्राम-सेवाकी दृष्टि सर्वतोमुखी है। कोई खादीका काम कर रहा है तो कोई गो-सेवाका, कोई चर्मालयका काम कर रहा है तो कोई नई तालीम-का, कोई सफाईका काम कर रहा है तो कोई कुष्ठ रोग निवारणका। और इन सबको विनोबाजी मार्गदर्शन देते हैं। इन कार्यकर्ताओंमेंसे आधुनिक विद्या-प्राप्त व्यक्ति बहुतही कम है। और तो भी आज इनमेंसे हरएक जिलेका कारोबार संभालनेकी योग्यता रखता है और इनमेंसे कुछ तो प्रांतके मन्त्री-तक बन सकनेकी योग्यता रखते हैं। योग्य कार्यकर्ताओंका इतना बडा समूह गान्धीजीके सिवा शायद ही अन्य किसीने देशको दिया हो।

और इन कार्यकर्ताओंकी शिक्षा भी आप अपने जीवनसे ही देते है। आपने इनकी शिक्षाके लिए शायद ही कभी व्याख्यान दिए हो। यह शिक्षा आश्रमके विविध कामोंमे हिस्सा लेते लेते अनायासही मिल गई है। यही सच्ची नई तालीम है, जिसका सूत्रपात विनोबाजीने १९२२ से अपने आश्रमसे ही शुरू किय था। और शिक्षा भी जीवनोपयोगी सब चीजोंकी मिलती है। प्रार्थना और अध्यातम विषयसे लेकर चक्की चलाना, रसोई करना और पैखाना साफ करने तक भी। शारीरिक और बौद्धिक, तात्विक एवं व्यावहारिक, ज्ञान एवं कर्मका भेद यहां सम्पूर्ण रूपसे लोप हो गया है। जो व्यक्ति आश्रममें दुपहरमें कलमसे मासिक सम्पादका काम करता है वही सबेरे झाडूसे ग्राम-सफाई करता है और शामको रसोई घरमें आटा गोंदता है। यहां शिक्षा नामकी जीवनसे अलग कोई चीज है ही नहीं। समूचा जीवन ही

शिक्षाका काल और क्षेत्र है और शिक्षाका छोटेसे छोटा भाग भी जीवनको विकसित एवं समृद्ध करता है। ऐसी सर्वांगी शिक्षा गान्धीजीके आश्रमको छोड़कर शायद ही कहीं दी जाती हो।

विनोबाजी कर्मयोगके साक्षात अवतार है। जीवनके हर क्षेत्रकी समस्यापर उन्होंने विचार किया है और उसका हल उनके पास मोजूद है। और ये सब बातें उन्होंने कर्म करते करते प्राप्तकी है। विनोबाजीका टाल्स्टॉय के bread labour के सिद्धान्त पर पूरा विश्वास है। यही चीज उन्हे गीताके तीसरे अध्यायमेंसे मिलती है। और विनोबाजी सरीखे व्यक्ति अन्य पंडितोंकी तरह किसी भी बातपर विश्वास होनेपर वहीं नहीं ठहर जाते। रोम्याँ रोलाँ के 'Action is the end of thought' इस प्रसिद्ध वाक्यके अनुसार महापुरुष उसे कृतिमें उतारनेको अधीर हो उठते है। हररोज नियमित रूपसे सूत्रयज्ञ तो चलता ही है। आश्रमके अन्य सब शरीर परिश्रमोंके कामोंमे हिस्सा लेते ही है। कुछ वर्ष पूर्व वे हररोज ८ घंटा बुनाई एवं कताई करते थे। और जो भी काम करते हैं वह समझबूझकर एवं अपना पूरा मन उसमें लगाकर करते हैं। इसीलिए जिस किसी भी कामको उन्होंने अपने हाथोंसे किया उसमें क्रान्तिकारी सुधार कर बताए। सलाई पटरीसे रुइकी पूनियाँ बनाना यह उन्हींका अन्वेषण है। बुनकरोंको तकलीफ न हो इसलिए हाथकते हुए सूतका दुयटा करना यह भी आपकी ही खोजका परिणाम है। अहिंसक स्वावलम्बी समाज रचनामें इन संशोधनोका महत्व उतनाही है जितना कि मशीन युगकी आजकी हिंसा प्रधान समाजरचनामें डिफेन्सन या फॅरेडे की खोजोंका या अणुमके आविष्कारका। यहाँ कर्म ज्ञानसहित होता है और ज्ञानका भी अन्तिम छोर कर्म ही है।

आपने अपनी विद्यार्थी अवस्थामें खूप अध्ययन किया। बादमें अध्ययनके बारेमें भी आपने अपरिग्रह व्रत लिया। कामकी चीजके सिवा बहुते ही कम आजकल आप पढते है। लेकिन जिस चिजको आप उपयुक्त मानते है उसका अध्ययन तो जारी ही रहता है। राष्ट्रभाषा एवँ भारतीय भाषा

ओंको एक दूसरेके सन्निध लानेकी बात आपको लगी। फौरन उर्दू, बंगाली आसामी, उडिया, तमिल, तेलगू, कन्नड और मल्यालमका अध्ययन शुरू हुआ। सर्वधर्मसमभावके लिए कुरान पढ़ना चाहिए यह आपने तय किया। भाषामें कोई पुस्तक लिखी गयी हो उसीमें उसे पढ़नेपर उसका सच्चा महत्व समझमें आता है। इसलिए आपने फारसी एवं अरबी पढ़ी। फ्रेंच एवं जर्मनसे भी आप बिलकुल ही अनभिज्ञ नहीं है। लेकिन ये सब भाषाएँ आपने मनोविनोदके लिए या ज्ञानवृद्धिके लिए नहीं पढ़ी। लेकिन दुनियाके धार्मिक झगडे मिटानेके लिए सर्वधर्मसमभाव आवश्यक है ऐसा जानने पर एवं भारतीय भाषाओंको एक दूसरेके सन्निध लाकर निरक्षर बालकोंकी एवं प्रौढोंकी तकलीफ कम करना महत्वपूर्ण काम है ऐसा लगानेपर इस कामोंके लिए पढ़ी। इस सागरमंथनके कारण फौरन ही लोक नागरीकी रत्नपेटिका समुद्रसे बाहर निकली। आप कहीं भी जाए, विनोबाजी हर चीज मानव-सेवाकी दृष्टिसे ही करते हैं।

और इतने बडे तत्त्वज्ञ, लेखक संशोधक और विचारक होनपर भी आप कल्पनातीत सादगीसे रहते हैं। लज्जा रक्षणके लिये घुटनोंतक पहुंचने वाला एक वस्त्र आपके लिए पर्याप्त होता है। आपका भोजन भी अत्यंत सादा रहता है। और चरखे सरीखी चीजोंके सिवा अन्य कोई चीज आप अपने लिये नहीं रहते। आपकी जीवन दृष्टि इतनी साफ, स्थितप्रज्ञवत् निर्मोही है कि प्राणप्रिय चरखेका भी मुझे अनासमय मोह न हो ऐसी उनकी अभिलाषा हैं।

आपकी नियमितता प्रशंसनीय हैं। छोटेसे छोटा काम भी हम क्यों न करे, वह नियमितरूपसे ईश्वरार्पण बुद्धिसे अपनी चित्त शुद्धिके लिए हररोज करें ऐसा आपका कहना हैं। वस्तुतः कोई काम छोटा या बडा नहीं होता ईश्वरार्पण बुद्धिसे किए जानेवाले सब काम अनंतगुणफल देनेवाले होते हैं १९४५ में जेलसे छुटनेपर आपने अपने लिए एक काम चुना जो दुनियाकी आखोंमें बहुत मामूली था। वह था २० सालतक यानी एक पीढ़ी तक

आपके निवासस्थानसे (पवनारसे) ३ मील दूर सुरगांव नामके गांवके ग्राम: सफाईका। यह काम आपने गांधीजीके मृत्युतक लगातार आश्चर्यजनक नियमिततासे किया। उनका कहना था कि सूरज जब कभी भी छुट्टी नहीं लेता, तो मैं क्यों भंगी कामसे छुट्टी लूं ? और आशावाद और ईश्वरपरकी श्रद्धा इतनी जबरदस्त कि मैं अपना कर्तव्य २० सालतक करूं तो एक पीढ़ीके बाद भंगी कामको करनेके लिए लोग खुदबखुद ही तैयार हो जावेंगे और तब मैं इस कामसे मुक्त हो जाउंगा। सुरगांवमें मैं ३ रोजतक अपने मित्रोंके साथ गतवर्ष था। वहां ठीक ८ बजे विनोबाजी अपनी अहिंसक बंदूकको कंधेपर रखकर (यानी सफाईके लिए फावडा कंधेपर डालकर) पवनारसे सुरगांव पैदल आते थे । चाहे कितनी ही बारिश हो या सर्दी हो आपके इस व्रतसे आप पराङ्मुख नहीं हुए। केवल ऐसे व्यक्ति ही नियमिततापर या श्रमप्रतिष्ठापर प्रवचन या उपदेश करनेके अधिकारी होते है। और आश्चर्य तो यह कि ऐसे व्यक्तियोंको इन कामोंके बारेमें शायद ही कभी व्याख्यान देना पडता हो । उनका कर्मही इतना प्रभावी और व्याख्यानोंसे कईगुणा अन्योंका हृदय परिवर्तन करनेमें क्रांतिकारी सिद्ध होता है कि व्याख्यानोंकी आवश्यकता ही नहीं पडती।

आप जीवनके हर क्षेत्रमें कुछ न कुछ मौलिक विचार रखते हैं । कई दफा तो आपके विचार इतने मौलिक होते हैं कि यह आश्चर्य होता है कि इतना कम पढनेवाले और रेडिओ, विपुल पत्रपत्रिकाएँ एवं ग्रंथालय इत्यादिसे कोसों दूर रहनेवाले आपको इतने मौलिक विचार आते कहांसे है ? ग्रंथभारसे उनकी सहज बुद्धि दब नहीं गई हैं और इसीलिए उनके विचार मौलिक है । महात्मा गाधी-स्मारक फण्डके बारेमें आपने अभी अभी घोषित किया, "मेरे मतसे पैसोंसे गांधीजीका स्मारक बन ही नहीं सकता। अशोकके लिए भी कई शिलालेख एवं उपदेश स्तम्भ बने, लेकिन कितने उन्हे पढते है और कितनोंको अशोकका नाम मालुम हैं ? लेकिन राम और कृष्ण, कबीर और मीरा हर व्यक्तिके जीभपर है। इसलिए

गांधीजीका स्मारक गांधीजी सरीखी जिन्दगी बितानेमें ही है । हालही के अजमेरके एक भाषणमें आपने कहा कि गांधीजीने अपने पुत्रपुत्रियोंके लिए अनन्त सम्पत्ति छोडी है। लेकिन इस सम्पत्तिको ग्रहण करनेके लिये योग्यता चाहिये और साधना चाहिये। यह धन चाहे जिसको नहीं मिल सकता। आपके तमाम वचनोंमें आशा एवं आत्मविश्वासकूटकूटकर भरा हुआ रहता है। अपनी 'विचार पोथी' नामकी पुस्तिकामें आप कहते है- 'हिमालय उत्तरमें क्यों है ? क्योंकि मैं दक्षिणमें हूं। मैं चाहूं उस दिशामें हिमालयको रख सकता हूँ। और इस आत्मविश्वासके साथसाथ नम्रताका मधुर संमिश्रम हुआ है। हमको चींटीसे भी जादा नम्र बनना चाहिये यही उनकी सीख है।

ग्राम-सेवा तो आपके जीवनकी साधना है। आपकी आज तककी सारी तपस्या भारतकी ग्राम-सेवाके लिये ही है। भारत ग्रामीण देश है, रहेगा और रहना चाहिये असा आपका दृढ़ मत है। भारतको यदि अहिंसाका संदेश दुनियाको देना हो तो वह स्वयंपूर्ण, ज्ञानवान् एवं कर्म परायण गांवोंसे ही मिलेगा अैसी आपकी दृढ़ श्रद्धा है। असलिये गांवोंमें जावो, गांवोंकी सेवा करो अैसा आपका घोष हमेशा शुरू रहता है । ग्राम-सेवाकी अडचनें दूर करनेमें आप कभी नहीं थकते। गणित के साथ साथ यदि आपका सबसे प्यारा कोअी विषय हो तो ग्राम-सेवा। स्वयंपूर्ण ग्रामका स्पष्ट दर्शन आपको है। ग्राम-सेवा कबतक करनी चाहिये अैसा जब मेरे अेक मित्रने उनसे सुरगांवमें सवाल किया था तब आपने दूसरा सवाल पूछा "भोजन कब तक करना चाहिये ?" और आगे बताया "अन्त तक। अीश्वरकी यही खूबी है कि वह अन्त तक ग्राम-सेवककी या किसी भी सन्मार्गसे चलनेवाली पथिक की कसौटी लेता है और उसके मृत्युके बाद फौरन उसकी जगह पर दूसरा व्यक्ति भेज ही देता है।" यहाँ आपने God sees but waits वाली टॉलस्टॉयकी कहानीकी याद दिलाई। विद्यार्थी हो या बालक, नौजवान हो या बूढ़ा हो, पुरुष हो या स्त्री — उन सबके लिये आपकी

चुका था। लेकिन १९४१ के बाद आपके द्वारा न तो हुआ देशभरका दौरा या न लगा व्याख्यानोंका तांता या न लिखी गई पत्रपत्रिकाओंमें लेखोंकी मालिका या न देखनेको मिला उनके फोटोका बाहुल्य। सेवाग्रामसे चार मील रहने पर भी शायद ही बार बार गान्धीजीको मिलनेको आप गये हों। काँग्रेसका अध्यक्ष होनेसे या केन्द्रीय मन्त्री मंडलमें जानेसे आपकी महत्ता नहीं बढ़ती, लेकिन काँग्रेस और केन्द्र धन्य हो जाते, नेहरूजी खुशीसे फूले नहीं समाते। लेकिन उधर जानेका विचार तक आपको स्वप्नमें न हुआ। क्यों कि आप सामान्य मार्गके पथिक नहीं, अनन्य साधारण मार्गके पथिक हैं।

सत्य और अहिंसाकी साधना आप गत ३० वर्षोंसे कर रहे हैं। उसी साधनाके हेतु आपका सब जीवन है और उसीके कारण आपने कुटुम्ब नहीं बनाया। जीवन भर लगातार जाग्रत रहनेके कारण अब आप स्थितप्रज्ञताके बहुत नजदीक पहुँच गए है। कोईभी मोह आपको सता नहीं सकता या दुःख आपको विचलित नहीं कर सकता। स्व. जमनालालजीसे आपका अपार स्नेह था। लेकिन उनकी मृत्युसे आपको एक क्षण भी दुःख नहीं हुआ। असीम आनन्द हुआ कि जमनालालजीकी आत्मा अभीतक एक शरीरमें कैद होनेसे सीमित काम कर पा रहा था। मुक्त हो जानेसे अब जादा काम कर सकेगा। गांधीजीके प्रति आपसे जादा श्रद्धा और आदर अन्य किसका हो सकता है। लेकिन गांधीजीकी मृत्यु भी आपके चित्तकी अविचलित अवस्थाको न तो विचलित कर सकी या न हिंदूमहा-सभा या राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघके विरूद्ध द्वेष पैदा कर सकी। ३१ जनवरी की आपने पवनारमें गांधीजीकी मृत्युके बाद जो पहला व्याख्यान दिया उसमें इर्षा वा असूया द्वेष या क्रोध तनिक भी नहीं था। शत्रुसे भी प्रेम करो और हत्यारा तो निमित्त मात्र है यही पुरानी बात यह आधुनिक ऋषि कह रहा था। अविचलित चित्तका एवं स्थितप्रज्ञताका इससे बढिया उदाहरण अन्य क्या हो सकता है?

ऐसे है हमारे प्यारे लोकनेता विनोबाजी। गांधीजीके बाद आध्यात्मिक क्षेत्रमें उनकी बराबरीका कोई है ही नहीं। अन्य क्षेत्रोंमें भी आप अनन्यसाधारण है। जनता उन्हें अब जान रही है। और वे तो अपने देवतको यानीं जनता जनार्दनको कई वर्षोंसे अच्छी तरहसे जानते है। अपने देवताकी पूजाके लिए ही आपने आजतक काम किया और भाविष्यमें भी वही करेंगे। गांधिजीके बाद भारतीय संस्कृतिके आप एकमेव प्रतीक है। गांधीजीका फायदा हम उनके जीवन कालमें न उठा सके। अब तो भी भारतीय नरनारियोंको जागना चाहिए और विनोबाजीके जीवन कालमें उनका पूरा स पूरा लाभ लेना चाहिए और गांधीजीके प्रति हमने जो कृतघ्नताकी उससे अंशतः बरी होना चाहिए। क्योंकि गांधी विचारधारा के सर्व श्रेष्ठ प्रतीक आज संत विनोबाजी ही है। सारी दुनियाके लिए ऐसे महात्मा साधुपुरुष सौभाग्यशाली होते है। भारतके लिये तो और विशेषरुपसे। कारण भारतके सुनहले भविष्यपर आपकी अटूट श्रद्धा है। और मानव समाजको अच्छे दिन देखनेको अवश्यमेव मिलेंगे ऐसा आपका दुर्दम्य आशावाद है। आप सम्पूर्णरूपेण वैज्ञानिक है और विज्ञान और हिंसा की लढाई में हिंसा हारेगी एवं विज्ञान और अहिंसाकी जीत होगी ऐसा आप बारबार प्रतिपादन करते है। विनोबाजीकी केवल तारीफ करनेसे अब हम मुह मोडे। क्योंकि गांधीजीकी हमने बहुत तारीफ की और उतनेसे ही उस महात्माके प्रति हमारा फर्ज पूर्ण हुआ ऐसा समझकर कृतार्थता भी हमने ही मान ली। ऐसा अब न होना चाहिए। विनोबाजीके सेवामय जीवनसे हमें तदनुकूल अचारण करनेकी प्रेरणा हो यही हम सबकी प्रतिदिन उस परमप्रभुसे प्रार्थना होनी चाहिए और तदनुसार हमारा उत्कट प्रयत्न होना चाहिए।

आधुनिक महर्षि आचार्य विनोबा

[लेखकः— जमालुद्दीन तुरक]

भारतवर्षमें ऋषि-मुनियोंकी कमी नहीं रही है। भारत-भूमि ही ऐसी है जिससे हमें समय समय पर महात्मा मिलते रहे हैं, जिन्होंने मानवताके कल्याणका रास्ता बताया है। बीसवी सदीमें ईश्वर तुल्य मानवके रूपमें गान्धीजीको हमने पाया था। परन्तु वे भी हमारे बीच नहीं रहे। उनके निर्वाण होते ही हम निराश हो गये; परन्तु अपने पीछे आशाका बीज बो गये हैं। उन्होंने जो कुछ हमें दिया उसके साथ एक व्यक्तिको भी दिया है। जो कुछ छोड़कर गये उसमें प्रजातिके बीच अेक अैसे व्यक्तिको छोडकर गये जो उनके सिद्धहस्त अनुयायी हैं—उनके प्रतिनिधि कहे जाते हैं। वे हैं 'विनोबाजी भावे'। बापूके जीवनकी सभी झाँकियाँ हमें उनमें देखने मिलती है। "बापूके बाद प्रतिक्षण अपने जीवनमें विकास करनेकी शक्ति यदि किसीमें है तो वह है विनोबामें। विनोबाका प्रभाव आज नहीं तो वर्षों के बाद लोग अवश्य जानने लगेंगे" यह उद्गार है स्व. महादेवभाई देसाई के। और म. गान्धीजीने भी 'विनोबाजी कैसे हैं?' इस बारेमें सन् १९४० में हरिजनमें प्रकाश डाला था।

विनोबाजी एक आधुनिक महर्षि हैं। अपने जीवनके ३० वर्ष गांधीजी के सहयोगमें बिताये हैं। वे कृतिक अनुयायी है केवल बातुनी नहीं। जिस चीजको वे करना चाहते हैं उसपर पूर्ण विचार कर लेते है- समझ लेते

विनोबाजी एक असाधारण पुरुष है। संसारमें कई व्याकरणाचार्य होते हैं परन्तु वे अपनी धूनके पूरे व्याकरणाचार्य है। स्वावलम्बनमें पूर्ण विश्वास रखते हैं। विनोबाजीने एकांत जीवन साधना की है, उसमें फलकी आशा

नहीं कर्मोंकी उपासना है। जिसके फलस्वरूप उनके वाणीमें एक प्रकारकी ओजस्विता है। उनकी साधना एक सर्व-संग परित्यागी और नित्यानित्य वस्तु विवेकी मुमुक्षुकी साधना है। इसी साधनासे हजरत ओसाका अहिंसक तेज अपने व्यक्तित्वमें पैदाकर उसे गीताके शब्दोंमें बताया है।

विनोबाजीने कहा है, जहाँ सबको मतदानका अधिकार है और जिसकी बहुसंख्या अल्पसंख्याकी रक्षाके लिये सावधान है, वह 'स्वराज्य' है। इसी-लिये विनोबाजीने कहा है "स्वराज्यकी कमी सूराज्यसे पूरी नहीं हो सकती स्वराज्यका असली अर्थ है दाल-रोटीके सवालसे मुक्त होना।" म. तिलक का भी यही कहना था और विनोबा भी अिसी मुक्तिकी खोजमें तन्मय हैं। अिसी मुक्तिकी भावनासे वे आजिवन निष्ठापूर्ण ब्रम्हचारी है।

स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है"। तिलकके इस वाक्य पर विनोबाजीने अच्छी तरह प्रकाश डाला है। विनोबाजीने कहा हैं, लोगोंने इसे अन्धा बनकर पढा हैं। तिलकका यह वाक्य पन्नेके आखिरमें लिखा हुआ था और पढनेवालोंनें वहीं तक पढकर छोड़ दिया-आगे पन्ना पलटा-कर पढनेकी कोशिश नहीं की। तिलकने उसके आगेके पन्नेपर यह भी लिखा था 'कार्य' से परंतु लोगोंने उसको पढना ही छोड़ दिया और 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार हैं' कहने लगे। यदि जन्मसिद्ध अधि-कार होता तो हमें 'स्वराज्य' जन्मसे ही मिल जाता। परंतु बच्चा जबसे पैदा होता है वह गुलाम ही बना रहता है। वह दूसरेका मुंह ताकता है। इसलिए स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार नहीं "कार्यसिद्ध अधिकार है।"

वर्धासे छः मीलकी दूरीपर एक गांव है पवनार। यहां विनोबाजीका आश्रम है। पर वहां जानेके पूर्व नालवाडी मिलती है, जो विनोबाजीकी रचना है। विनोबाजीमें रचनात्मक कार्यक्रमसे अत्यंत प्रेम और महान त्याग वीरता है। दुबली पतली देह यष्टि पहलेसे ही हड्डियोंको कंकाल जैसे दीखनेवाले नियमित व्यायामसे सदा स्वस्थ रहते है। नियमित व्यायाम उनके जीवनका लक्ष्य हैं।

जेलमें जबकि 'ए' और 'बी' क्लासका सुख जेलमें व्यतित करना मिल रहा था तब विनोबाजीने स्वेच्छासे 'सी' क्लासका अनुभव उठाया है। मित-भाषित, नित सेवारत रहना और प्रत्येक क्षण श्रमपूजामें व्यतीत करना विनोबाजीकी महानताकी कुंजी है। अत्यंत कठोर आचमेसे गांधी जैसे पवित्र होकर विनोबाजीकी आत्मा कुंदनसी निखरी है।

विनोबाजीने ४५ वर्षकी उम्रमें अरबी जैसे कठिन भाषाको सीखकर अपनाया है और सही तौर पर मौलाना आजादके सामने फातेहाकी सुरे पढ़कर सुनाया है। भाषा शास्त्रमें आपका ज्ञान पूर्ण है। सोलह भाषाओंको विनोबाजी जानते हैं। वेद, उपनिषद्, गीता, ब्रह्मसूत्र और संस्कृतके तो महान पंडित है। इसके अलावा हिंदी, मराठी, बंगाली, गुजराती, उडिया तेलगू, तामिल, सिंधी, कानडी, मलयालम, उर्दू, फारसी, अरबी, अंग्रेजी फ्रेन्च, लॅटिन, आदि भाषायें विनोबाजी अच्छी तरह से जानते हैं। संकल्प की दृढ़ताने विनोबाजीके व्यक्तित्वमें चमत्कारी साहस और अपूर्व बातें पैदा करदी है। इतनाही नहीं कताईका शास्त्र भी निर्माण किया है। इतना ही नहीं उद्योगी कार्यकर्ताओंको तैयार भी किया है। विनोबाजी 'सर्व धर्म समभाव' व्यक्ति हैं। और सौ फी सदी राष्ट्रीय वृत्तिके हैं।

विनोबाजीका व्याख्यान जिन्होंने सुना हैं वे उसे कभी भूल नहीं सकते। उनके वाणीमें कला है, उसमें दर्द होता है, मगर चीख नहीं होती, दृष्टांतोका सहज व्यवहार होता है परंतु चमत्कार ना पांडित्यका प्रदर्शन नहीं। भाषामें सरलता रहती हैं, ऊंचे शब्दोंकी प्रचुरता नहीं। भाषा जनसाधारणके समझने योग्य होती हैं। साहित्यकी ऊंचे शब्दोंकी भरमार नहीं। जब वे बोलते हैं तो उनका अंतस्तल शब्दोंमें उमड़ पडता हैं। वे नियमके और समयके बहुत ही पाबंद है। रेलगाडी भले ही समयसे पीछे स्टेशन पर पहुचे या देर से छुटे। परंतु विनोबाजी ऐसे नियमोंमेंसे नहीं है। वे व्याख्यानके निश्चित समयसे पांच मिनिट पहले आ जाते हैं और निश्चित समय पर अपना प्रवचन सुना कर चले जाते हैं। उस समय पांच ही आदमी उपस्थित क्यों न

हो वे अपना प्रवचन सुना देंगे । गीताका समश्लोकी अनुवाद उनकी काव्य शक्ति और मस्तिश्क का परिचायक है ।

विनोबाजीके विचारोंमें ऊंचे दार्शनिक भाव रहते हैं तो व्यावहारिक सुझाव भी । जहाँ तीव्र व्यंग रहेगा तो वहाँ आर्द्रताका अंग भी । उन्होंने युद्ध टालनेका वास्तविक उपाय बताया है कि हम 'अपनी आवश्यक चीजें अपने आसपास तैयार करायें और उनके उचित दाम दे । 'मजदूरकी मजदूरीकी कीमतको भी भली भांति परखते हैं । एकबार विनोबाजी बाजारमें गये और एक दुकान पर बैंगनका दाम पूछा । दुकान पर एक बुढ़िया थी । बुढ़ियाने कहा—' दो आना सेर ' । विनोबाजीने झट कहा ' तू झूठ बोलती है, । इसकी कीमत दो आने सेर नहीं है । बुढ़िया सहम गई और आश्चर्यसे देखने लगी । वह बाजारमें सबसे दो पैसा कम भावसे बेच रही थी । "इसकी असली कीमत तो आठ आना सेर होनी चाहिये । इसको पैदा करनेमें जीतनी मेहनत लगी है उस हिसाबसे दो आना सेर बहुत कम है । " विनोबाजी परिश्रमको अधिक महत्व देते हैं । वे एक चिकित्सक भी है । गोशालमें बंधी हुई गायके पांव शेर दूधकी अपेक्षा पहाडीपरसे चरकर आई हुई गायका आधा शेर दूधको अधिक पसंत करते है । स्वास्थ्यके दृष्टिसे पहाड़परसे चरकर आई हुअी गायकी और उसके दूधको अधिक महत्व देते हैं ।

विनोबाजीका व्यक्तित्व सर्वांगपूर्ण है । उनके व्यक्तित्वकी जितनी गहरायी है उतनी ऊचाअी भी है । इस छोटेसे लेखमें उनकी कल्पना देना संभव नहीं है । विनोबाजी तत्वज्ञानी, साहित्यिक; कवि, ज्ञानी-भक्त निर्भय -कर्मवीर, आधुनिक संत-महात्मा है । उन्हें प्रणाम कर इस लेखको समाप्त करता हूँ ।